ISSN 2320-2858 UGC Journal No. 42684 फरवरी 2023
वर्ष - 11 अंक - 123

श्री श्री नरहरि सेवा संस्थान
प्रत्यक्ष दर्शी लोकस्य सर्वदर्शी भवेन्नरः

ब्रज लोक संपदा

सौजन्य : गीता शोध संस्थान एवं रासलीला अकादमी, वृन्दावन

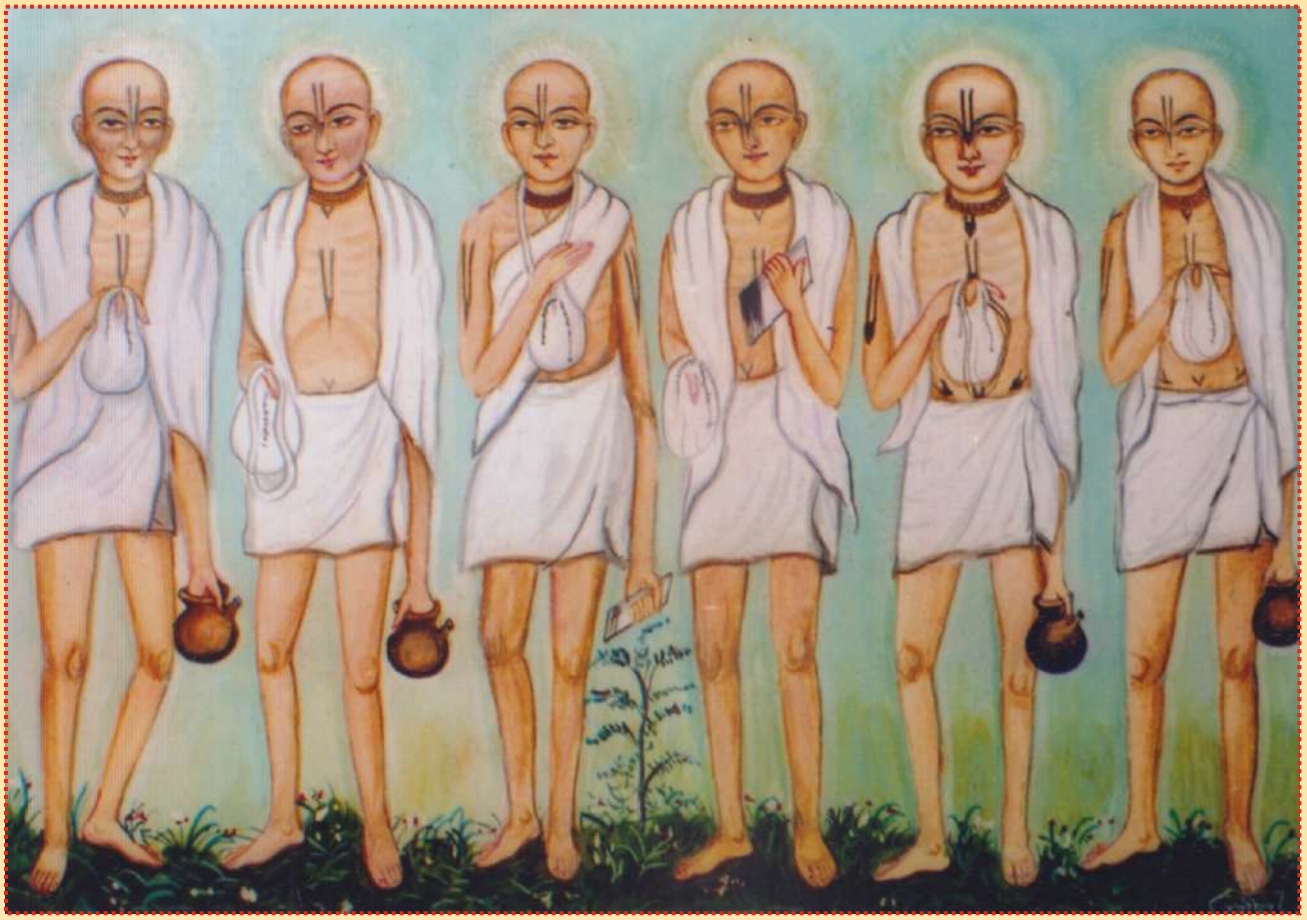

षट् गोस्वामी

~O bmH g|nXm

साहित्य, कला, संस्कृति, मानविकी एवं समाज विज्ञान की अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका

संपादक :

डॉ. उमेश चन्द्र शर्मा

★

सह-संपादक :

चन्द्र प्रताप सिंह सिकरवार

★

सहयोग :

डॉ. रश्मि वर्मा

★

कला संयोजन :

ब्रज ग्राफिक्स

कार्यालय :

ब्रज लोक संपदा कार्यालय, 302, गुरुकुल रोड, वृन्दावन

मो. : 09410619265, 7017709490

Website : www.brajloksampada.com ⋆ E-mail : brajloksampada@gmail.com

स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक

डॉ. उमेश चन्द्र शर्मा द्वारा चौधरी प्रिंटिंग प्रेस, ब्रह्मकुण्ड, वृन्दावन, मथुरा से मुद्रित कराकर 302, गुरुकुल मार्ग, वृन्दावन (मथुरा) से प्रकाशित।

ब्रज लोक संपदा भारतीय संस्कृति के मासिक शोध-पत्र की पृष्ठभूमि में हमारा यह सद् प्रयास है कि भारत की क्षेत्रीय कला व साहित्य का प्रज्ञात कलेवर परिवेषण कर राष्ट्रीय भावात्मक एकता के सूत्र को परस्पर संस्कृति के आदान-प्रदान से पुष्ट करें; इसी से व्यक्ति का व्यक्तिवाद शिथिल होकर समन्वित भाव से लोक अस्मिता के रूप में विकासोन्मुख नव जीवन का स्वरूप ग्रहण करेगा।

आवेदन - पत्र

कृपया मैं व्रजलोक संपदा पत्रिका का एक वर्ष का सदस्य बनना चाहता/चाहती हूँ। सदस्यता शुल्क.....नकद/चैक/ड्राफ्ट नं.....
दिनांक .....संलग्न है।

श्री/श्रीमती/.....

पिता/पति का नाम.....

जहाँ पत्रिका मंगाना चाहते हो वहाँ का पूरा पता .....

.....

पिन..... दूरभाष/मो०.....

हस्ताक्षर

(कृपया उक्त आवेदन पत्र को हाथ से लिखकर या टाईप कराकर भेज सकते हैं)

सदस्यता शुल्क

एक प्रति- 100/-, एकवर्षीय - 1100/-

विशेष: अपना चैक/ड्राफ्ट: श्रीश्री नरहरि सेवा संस्थान के नाम से
302, गुरूकुल रोड, वृन्दावन, मथुरा, उ.प्र., पिन: 281121 पर भेजें।

बैंक का नाम - केनरा बैंक

शाखा - विद्यापीठ चौराहा, वृन्दावन

खाता संख्या - 2480101002061

आईएफसी कोड - CNRBN0002480

प्रकाशित आलेखों के विचारों से संपादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
शोध पत्रिका से सम्बन्धित सभी विवाद केवल मथुरा न्यायालय के अधीन होंगे।

सम्पादकीय

डॉ. उमेश चन्द्र शर्मा

उ.प्र. ब्रज तीर्थ विकास परिषद के मुख्य कार्यपालक अधिकारी के आदेश से विगत अंक में अष्टछाप के कवियों का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया गया था जो कि हमारे पाठकों को अति प्रिय लगा। उसी प्रकार प्रस्तुत अंक का अनुशीलन चैतन्य संप्रदाय के षट् गोस्वामियों की आराधन स्थलियों के साथ समाधि स्थलों का भी अवलोकन किया गया। जिसे हम सांगोपांग रूप से यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं।

श्रीचैतन्य देव सन् 1515 की शरद ऋतु में जगन्नाथ पुरी से ब्रज में पधारे थे। आपने ब्रज में स्थलान्वेषण का कार्य सम्पन्न करने के साथ ही अनेक लीला स्थलियों का उद्धार किया तथा अपने अनुयायियों को भी इसी की प्रेरणा प्रदान की। सर्वप्रथम आपके द्वारा निर्दिष्ट अति प्रिय पार्षद सनातन गोस्वामी, रूप गोस्वामी, गोपाल भट्ट गोस्वामी, रघुनाथ दास गोस्वामी, रघुनाथ भट्ट गोस्वामी और जीव गोस्वामी का आगमन हुआ। इन्हीं छः गोस्वामियों को षट् गोस्वामियों के नाम से जाना जाता है।

आपने ब्रजमण्डल की धार्मिक एवं सांस्कृतिक समृद्धि में अपूर्व योगदान दिया। इस संप्रदाय का ब्रज की धार्मिक भावना पर गंभीर प्रभाव रहा है।

अन्तर्वस्तु

1.	श्रीमद्भगवद् गीता	05
2.	गौड़ीय सम्प्रदाय (एक परिचय) – *ब्रज गोपाल दास अग्रवाल*	06
3.	षट् गोस्वामी एवं सप्त देवालय – *डॉ. उमेश चंद्र शर्मा*	09
4.	हेरिटेज लुक में दिखेगा उ.प्र. ब्रज तीर्थ विकास परिषद कार्यालय – *चन्द्र प्रताप सिकरवार*	31
5.	ब्रह्मांड घाट की सुंदरता देख तीर्थयात्री मुग्ध	32

श्रीमद्भगवद्गीता

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्॥

जो अनन्य प्रेमी भक्त जन मुझ परमेश्वर को
निरन्तर चिन्तन करते हुए निष्काम भाव से भजते हैं,
उन नित्य-निरन्तर मेरा चिन्तन करने वाले पुरुषों का योगक्षेम
मैं स्वयं प्राप्त कर देता हूँ॥9.22॥

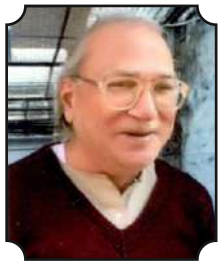

गौड़ीय सम्प्रदाय

(एक परिचय)

ब्रज गोपाल दास अग्रवाल

पद्मपुराण के अनुसार चार सम्प्रदाय माने गये- श्री, ब्रह्म, रुद्र, सनक। ये चारों सम्प्रदाय अपने प्रवर्तक-आचार्यों के नाम से जाने जाते हैं। रामानुज को श्री सम्प्रदाय का, मध्वाचार्य को ब्रह्म सम्प्रदाय का, विष्णुस्वामी को रुद्र सम्प्रदाय का, निम्बार्क को चतु:सन सम्प्रदाय का आचार्य माना गया है। फिर गौड़ीय सम्प्रदाय कहाँ रहा? वैष्णवों का एक वर्ग गौड़ीय सम्प्रदाय को मध्वाचार्य सम्प्रदाय के अन्तर्गत मानता है, जबकि दूसरा वर्ग इसे एक पृथक् पाँचवाँ सम्प्रदाय मानता है।

गौड़ (बंगाल) से जुड़ा होने के कारण बहुत लोग इसे गौड़ीय सम्प्रदाय कहते हैं। उधर पुरी के बड़े बाबा महाशय इसे गौर (गौरांग) से जोड़कर 'गौरीय' भी कहते थे। पद्मपुराणोक्त चारों सम्प्रदायों ने ब्रह्मसूत्र का अपना-अपना भाष्य प्रस्तुत किया था। चैतन्य देव ने श्रीमद्भागवत को ही ब्रह्मसूत्र का अकृत्रिम भाष्य माना।

"चारि वेद उपनिषदे जतो किछु हय। तार अर्थ लइया व्यास करिला संचय॥
अतएव ब्रह्मसूत्रेर भाष्य श्रीभागवत। भागवत-श्लोक, उपनिषत् कहे एक मत॥"

भागवत ही प्रमाण-चूड़ामणि है, इसलिये उन्होंने अपने अनुगतों को कोई अन्य भाष्य लिखने की प्रेरणा नहीं दी। उनके मतानुयायी श्रीरूप-सनातन-जीव आदि गोस्वामियों ने ब्रह्मसूत्र का नया भाष्य तैयार नहीं किया। किन्तु वह नया भाष्य प्रकाश में आया। इसके पीछे रही वह रोचक ऐतिहासिक घटना।

जयपुर (राजस्थान) के महाराजा महाप्रभु के मतानुयायी थे। उनके गोविन्द-मन्दिर में नारायण से पहले गोविन्द की पूजा होती थीं। अन्यान्य सम्प्रदायों के सन्त महन्तों ने कहा कि पहले नारायण की पूजा होनी चाहिये, फिर गोविन्द की। उधर कुछ पंडित सन्त-महन्तों ने गोविन्द-मन्दिर के चैतन्य मतानुयायी बंगाली सेवकों को यह कहकर सेवा से अलग कर दिया कि वे 'असम्प्रदायी' हैं, अर्थात् उनका अपना कोई भाष्य नहीं। इतना ही नहीं, उन लोगों ने राधारानी का श्रीविग्रह भी गोविन्ददेव से अलग करवा दिया। इस घटनाक्रम की जानकारी राधाकुण्ड वृन्दावन के वयोवृद्ध वैष्णव श्रीविश्वनाथ चक्रवर्तीपाद को हुई, तो उन्होंने अपने विद्वान शिष्य श्रीबलदेवविद्याभूषण को जयपुर भेजा। जयपुर-महाराजा की अध्यक्षता में बड़े-बड़े पंडित विद्वानों की उपस्थिति में बलदेवजी ने ब्रह्मसूत्र पर चैतन्यदेव और उनके अनुगत गोस्वामीगण का मत विस्तार से प्रस्तुत कर पंडित-मण्डली को परास्त कर दिया। परिणामस्वरूप राधारानी पुन: गोविन्ददेव के पास प्रतिष्ठित हुईं। बंगाली वैष्णव भी फिर से गोविन्ददेव की सेवा में नियुक्त हो गये।

जयपुर का पण्डित-समाज इतने से सन्तुष्ट नहीं हुआ। उसने श्रीपाद बलदेव से अपना भाष्य लिखित रूप में दिखाने को कहा, तो उन्होंने इसके लिए कुछ समय माँगा। वे इस महत् कार्य को लेकर चिन्ता में पड़ गये, तो स्वयं

गोविन्ददेव ने स्वप्न में कहा- "तुम निमित्त मात्र बनकर कार्य आरम्भ करो। भाष्य में स्वयं लिखूँगा।" इस प्रकार स्वप्नादिष्ट होकर बलदेवजी ने चैतन्य और चैतन्यानुचरों के मत-सिद्धान्तों के अनुरूप अपना भाष्य लिखा। भाष्यकार श्रीबलदेवजी ने ग्रन्थ का समापन करते हुए स्पष्ट लिखा है-

"विद्यारूपं भूषणं मे प्रदाय ख्यातिं निन्ये तेन यो मामुदारः।
श्री गोविन्दः स्वप्ननिर्दिष्टभाष्यो-राधाबन्धुर्वन्धुरांगः स जीयात॥"

(जिन उदार पुरुषोत्तम ने मुझे विद्यारूपी भूषण प्रदान किया अर्थात् विद्याभूषण नाम से जगत् में प्रसिद्ध किया और स्वप्न में दर्शन देकर इस भाष्य का निर्देश किया, वे राधापति त्रिभंग-मनोहर श्रीगोविन्द जययुक्त हों।) 'श्रीगोविन्द भाष्य' नामक इस कृति का मूल सिद्धान्त है अचिन्त्य भेदाभेद।

भेदाभेद, अर्थात् भेद और अभेद। भिन्नता और अभिन्नता। जीव और ब्रह्म अलग-अलग हैं। वे एक भी हैं। फिर यह भेद-अभेद हैं अचिन्त्य, अर्थात् तर्क-युक्ति से परे। केवल शास्त्रगम्य! उदाहरण के लिये अग्नि और उसकी दाहिका शक्ति। समुद्र और उसकी तरंग। कस्तूरी और उसकी गंध। इसी प्रकार शक्तिमान और उसकी शक्ति। जीव ईश्वर का अंश है, इसलिये उसमें ईश्वर के गुण हैं। पर वह है 'अणु चैतन्य', ईश्वर हैं 'विभु चैतन्य'। दोनों चेतन हैं। इस दृष्टि से भगवान और जीव में अभेद (अभिन्नता) है। उधर भगवान का विभुत्व और जीव का अणुत्व दोनों का भेद (भिन्नता) स्पष्ट करता है।

जीव भगवान की तटस्था शक्ति है। तट न नदी के अन्तर्गत होता है, न तीरभूमि के अन्तर्गत। उसी प्रकार जीव न तो भगवान की अंतरंगा स्वरूपशक्ति है, न उनकी बहिरंगा मायाशक्ति। भगवान स्वांश हैं और जीव उनका अंश विभिन्नांश। जीव स्वयं भगवान श्रीकृष्ण का नित्यदास है, किन्तु वह उन्हें भूलकर अनादिकाल से बहिर्मुख बना हुआ है। इस बहिर्मुखता के लिये प्रभु की बहिरंगा मायाशक्ति उसे नाना प्रकार का दु:ख-भोग कराती है। साधु शास्त्र की कृपा से जीव जब कृष्णोन्मुख होता है, तो यह माया छूट जाती है और वह अपने प्रकृत स्वरूप (नित्य कृष्णदासत्व) में स्थित होकर प्रभु को प्राप्त कर लेता है।

ब्रह्म और जीव के भेद-अभेद का सहअस्तित्व है। दोनों ही समान रूप से नित्य-सत्य हैं। महाप्रभु ने नीलाचल में सार्वभौम भट्टाचार्य के आगे, फिर काशी में प्रकाशानन्द सरस्वती के आगे 'भेदाभेद सिद्धान्त' प्रकट किया। श्रीरूप गोस्वामी ने लघुभागवतामृत में, श्रीसनातन ने वृहद्भागवतामृत में, श्रीजीव ने षटसन्दर्भ और सर्वसंवादिनी में इस सिद्धान्त की बात की है।

ब्रह्म और जीव स्वरूप एवं सामर्थ्य से सर्वथा भिन्न हैं। अवश्य ही चैतन्य-अंश में दोनों एक हैं, क्योंकि ब्रह्म है विभु-चैतन्य और जीव है अणु-चैतन्य। सर्वदा भेदाभेद। जीव गोस्वामी ने 'सर्वसंवादिनी' में निष्कर्ष के रूप में कहा है- 'शक्ति शक्तिमान से पूरी तरह अभिन्न है, यह नहीं सोचा जा सकता, इसलिये उसका भेद पता चलता है। फिर उसकी भिन्नता भी सोचने में नहीं आती, इसलिये उसका अभेद प्रतीत होता है। इसलिये शक्ति- शक्तिमान का एक साथ भेद और अभेद स्वीकार्य है। फिर यह भेदाभेद अचिन्त्य है।'

अद्वितीय अखण्ड परतत्व ब्रह्म ही अपनी अचिन्त्य शक्ति के बल पर सर्वदा चार रूपों में प्रकट है- भगवत् स्वरूप में, धाम-लीला परिकर आदि के रूप में, जीव के रूप में, प्रकृति रूप में। अर्थात् यह मायिक ब्रह्माण्ड और

प्राकृत-अप्राकृत राज्य की प्रत्येक वस्तु अचिन्त्य भेदाभेद सम्बन्ध को लेकर गठित है। स्वयं श्रीगौरांग इस अचिन्त्य भेदाभेद सिद्धान्त के मूर्त स्वरूप हैं।

राधा पूर्ण शक्ति, कृष्ण पूर्ण शक्तिमान। दुइ वस्तु भेद नाहि, शास्त्र-परमाण॥
मृगमद तार गन्ध जैछे अविच्छेद। अग्निज्वालाते जैछे कभु नाहि भेद॥
राधाकृष्ण ओइछे सदा एकइ स्वरूप। लीला रस आस्वादिते धरे दुइ रूप॥ (चैतन्य चरितामृत)

द्वारका में एक साथ सोलह हजार एक सौ आठ महिषियों के साथ कृष्ण का लीला रंग एकत्व में प्रथक्ता का अच्छा उदाहरण है।

गौड़ीय सम्प्रदाय, अर्थात् स्वयं श्री चैतन्य महाप्रभु के मत में दास्य, सख्य, वात्सल्य और मधुर (कान्ता) भावों में कान्ताभाव सर्वोत्कृष्ट है, क्योंकि कान्ताभावयुक्त स्त्री के पति-प्रेम में दास्य की सेवा, सख्य की मैत्री, वात्सल्य का लाड़-प्यार भी विद्यमान है अर्थात् कान्ताभाव में अन्य तीनों भावों का समावेश भी होता है। यही कारण है कि चैतन्य देव ने राधा के कृष्णप्रेम को साध्य-शिरोमणि माना है। उनका 'प्रेमविलास-विवर्त' है चरम साध्य, जिसे मंजरीभाव-साधना से ही प्राप्त किया जा सकता है।

गौड़ीय सम्प्रदाय के आचार्यों ने 'विवर्त' का अर्थ किया है- परिपक्वता और विरोध। एक अर्थ 'भ्रम' भी है। राधा की कृष्ण-विलास की उत्कण्ठा ऐसे चरम पर पहुँच जाती है कि उन्हें मिलन में भी विरह की अनुभूति होती है, सामीप्य में भी दूरत्व लगता है। राधारानी यह भी भूल जाती हैं कि वे रमणी हैं और कृष्ण रमण। विलास की बराबर बढ़ती वासना में स्वयं कृष्ण भी भूल जाते हैं कि वे रमण हैं। राय रामानन्द ने महाप्रभु को जब विलास-विवर्त-सूचक स्वरचित गीत 'पहिलहि राग नयन भंगे भेलो' सुनाया था, तो उन्होंने तुरन्त राय के मुंह पर अपना हाथ रख दिया था। इसका सीधा अर्थ यह था कि सामान्य जन इस स्थिति, इस अवस्था के अधिकारी नहीं। गौड़ीय सम्प्रदाय के साधकों का यही साध्य-शिरोमणि है और इसका आस्वादन एकमात्र मंजरी (राधा-दासी) ही कर सकती हैं।

चैतन्य-परिकर कवि कर्णपूर के गुरु पंडित श्रीनाथ ने अपनी भागवत टीका के मंगलाचरणस्वरूप यह श्लोक लिखा था- "आराध्यो भगवान व्रजेशतनयस्तद्धाम वृन्दावनः, रम्या काचिदुपासना व्रजवधूवर्गेण या कल्पिता। श्रीमद्भागवतं प्रमाणममलं प्रेमा पुमर्थो महान, श्रीचैतन्यमहाप्रभोर्मतमिदं तत्राग्रहो नः परः॥" (श्लोकार्थः आराध्य हैं नन्दनन्दन कृष्ण; उनका धाम वृन्दावन। गोपियों द्वारा दिखाई गई भक्ति ही उपासना मार्ग। भागवत ही प्रमाण। प्रेम ही पुरुषार्थ। यहीं चैतन्य महाप्रभु का, प्रकारान्तर से गौड़ीय सम्प्रदाय का मत है।)

इस लेख के उपसंहार के रूप में एक प्रश्न स्वाभाविक रूप से उठता है। गलता-जयपुर की उस महती सभा में पंडित-वर्ग ने 'गोविन्द भाष्य' को स्वीकार कर गौड़ीय सम्प्रदाय को मान्यता दे दी, तो आज भी विभिन्न अवसरों पर 'चार सम्प्रदाय की जय' क्यों बोली जाती है? पाँच सम्प्रदाय कहने में संकोच होता है, तो सीधे सच्चे मन से 'सभी सम्प्रदायों की जय' तो कहा ही जा सकता है। वह कौन से तत्व हैं, जो भक्ति-साधकों को भी इतना विवश असहाय बना देते हैं ? परिस्थिति ने 'श्रीगोविन्द भाष्य' प्रकट करा दिया, गौड़ीय सम्प्रदाय को अस्तित्व में ला दिया, फिर यह उपेक्षा भाव क्यों, कैसे ?

षट् गोस्वामी एवं सप्त देवालय

डॉ. उमेश चंद्र शर्मा

प्रस्तुत लेख के मूल स्त्रोत का प्रवर्तन मध्वाचार्य जी द्वारा प्रवर्तित ब्रह्म संप्रदाय की परंपरा में श्री चैतन्य देव की प्रेरणा से गौड़ अर्थात् प्राचीन बंगाल प्रदेश में हुआ था। इसको चैतन्य सम्प्रदाय के नाम से हम सभी जानते हैं। इसका शास्त्रीय और लोक सम्मत स्वरूप ब्रज मण्डल में प्रवास करने वाले चैतन्य-भक्ति गौड़ीय गोस्वामियों ने निर्धारित किया था।

श्रीचैतन्य देव बंगाली ब्राह्मण थे। आपके पिता का नाम जगन्नाथ मिश्र और माता का नाम शचीदेवी था। आगे चलकर आप चैतन्य महाप्रभु के नाम से प्रसिद्ध हुए।

श्रीचैतन्य देव सन् 1515 की शरद ऋतु में ब्रज के लिये चले थे। आपके आगमन का मार्ग था झारखंड होकर काशी। वहाँ से प्रयाग होते हुए ब्रजमंडल की ओर चल दिये, इस प्रकार ब्रज वृन्दावन में पधारे।

श्री सनातन गोस्वामी

ब्रजयात्रा से लौटकर भी चैतन्य देव ने अनेक गौड़ीय विद्वानों को ब्रज में निवास करने की प्रेरणा दी थी। साथ ही उनसे कहा था कि लीला स्थलों का उद्धार करें। जिनमें ब्रज में सर्वप्रथम आने वाले रूप गोस्वामी, सनातन गोस्वामी थे। फिर गोपाल भट्ट, रघुनाथ दास, जीव गोस्वामी और रघुनाथ भट्ट आदि जिन्हें षट् गोस्वामियों के नाम से जाना गया।

1. श्री सनातन गोस्वामी- आप रूप गोस्वामी के सहोदर जेष्ठ भ्राता थे, आपका जन्म ई0 सन् 1488 में हुआ था। अथ से लेकर इति तक दोनों का जीवन आश्लिष्ट था। आपका पूर्व नाम सन्तोष था। आपको भी संस्कृत अरबी-फारसी में उत्कृष्ट दक्षता प्राप्त थी। विशिष्ट योग्यता के कारण गौड़ाधिपति हुसेन शाह ने आपको प्रधानमंत्री के पद पर नियुक्त किया। आपके सम्मान में शाह ने आपको दविर खास की उपाधि से

समाधि स्थल सनातन गोस्वामी, मदनमोहन मंदिर, वृन्दावन

भजन कुटीर सनातन गोस्वामी, बठैन कलाँ

भजन कुटीर सनातन गोस्वामी, चकलेश्वर, गोवर्धन

विभूषित किया। श्री चैतन्य देव से आपकी भेट रामकेलि में रूप गोस्वामी के साथ ही हुई थी। पुनः आपकी श्री मन्महाप्रभु से काशी में भेंट हुई आप दो माह पर्यन्त प्रभु के पावन सानिध्य में रहे तथा मर्मतत्व की व्याख्या श्रवण की। तत्पश्चात् श्रीधाम वृन्दावन में ई0 सन् 1519 में आ गये थे। आजीवन दोनों भाई ब्रज में ही रहे। वैष्णव जीवन की पूंजी भूत उदारता, शील और आर्जव इनमें आकण्ठ भरा था। ये परम विद्वान और प्रकृष्ट शास्त्रवेत्ता आचार्य और भक्ति हृदय, अतीव रसज्ञ भावुक थे। श्री सनातन गोस्वामी चैतन्य सम्प्रदाय के व्यवस्थापक कहे जाते हैं, आपको सम्प्रदाय में लवंग मंजरी माना जाता है। आपने ई0 सन् 1533 में ठाकुर मदन मोहन जी की सेवा का प्रवर्तन किया।

श्री रूप गोस्वामी

2. श्री रूप गोस्वामी– आपका पूर्व नाम अमर था, आपका जन्म ई0 सन् 1489 में दक्षिणात्य भारद्वाज गोत्री ब्राह्मण वंश में हुआ था। आप संस्कृत तथा राजभाषा अरबी–फारसी के प्रकाण्ड विद्वान थे। आपसे प्रभावित होकर हुसेन शाह ने आपको राजस्व सचिव के पद पर नियुक्त किया था। शाह ने प्रसन्न होकर इन्हें साकर मलिक की उपाधि से अलंकृत किया था। रामकेलि में इनकी भेंट श्री चैतन्य देव से हुई। पुनः काशी में दस दिवसीय आपको श्री मन्महाप्रभु की सन्निधि प्राप्त हुई।

रूप गोस्वामी जी का भजन कुटीर, टेर कंदब, नंदगांव

भक्ति तत्व और रस–सिद्धान्त हृदयंगम कर उनकी आज्ञा से ये ब्रज के लुप्त तीर्थों का उद्धार तथा कृष्ण भक्ति का प्रचार करने के लिए व्रज– वृंदावन आ गए थे। चैतन्य महाप्रभु के प्रथम कृपा पात्र होने के कारण वैष्णव–समाज में जेष्ठ समझे गये। रूप गोस्वामी भक्ति शास्त्र और रस ग्रंथों के प्रणेता थे। आप राधा–कृष्ण रस के आचार्य आप अनुपम काव्य–प्रणेता, राधिका रूप वैभव के कुशल चितेरे थे। चैतन्य सम्प्रदाय में रूप गोस्वामी को रूप मंजरी माना जाता है। आपने अपने इष्ट देव श्री गोविन्द देव जी का प्राकट्य ई0 सन् 1545 में गोमाटीला पर गौ के स्वतः दुग्ध क्षरण संकेत के आधार पर ब्रज वासियों की सहायता से किया।

रूप गोस्वामी जी समाधि स्थल एवं भजन कुटीर, श्रीराधादामोदर मंदिर, वृन्दावन

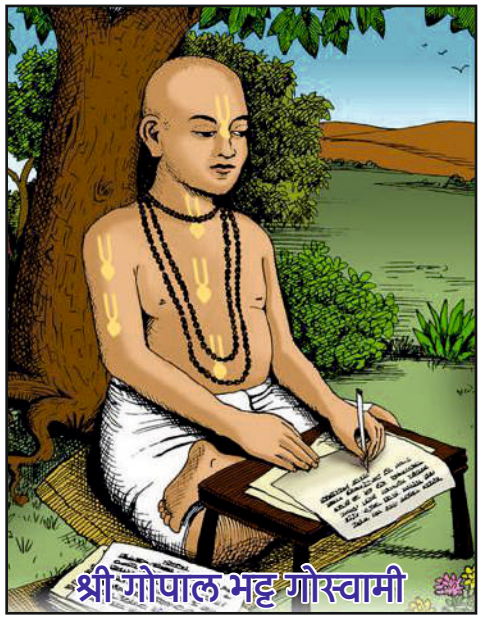
श्री गोपाल भट्ट गोस्वामी

3. श्री गोपाल भट्ट गोस्वामी– आप वृन्दावन के षट् गोस्वामियों में अन्यतम हैं। आपका जन्म ई0 सन् 1500 में दक्षिण में कावेरी नदी के तटवर्ती श्री रंगम् के निकट वेलमंडी ग्राम में हुआ था। आप सन् 1531 में श्रीधाम वृन्दावन में पधारे। आप द्वादश शालिग्राम, शिलाओं की अनन्य भाव से उपासना करते थे। आपकी उत्कृष्ट अभिलाषा थी कि शालग्राम विग्रह रूप में दर्शन दें, तो श्रृंगार सेवा से विशेष आनन्द की प्राप्ति होगी भगवान तो भक्त के भाव के अनुसार रूप ग्रहण करते हैं, उन शालग्राम शिलाओं से दामोदर शिला विग्रह रूप में परिवर्तित हो गई। अघटन घटना पटीयसी।

गोपाल भट्ट गोस्वामी शास्त्रों के धुरंधर पण्डित थे। ये परम विरक्त थे। भट्ट जी ने 72 वर्ष पर्यन्त वृन्दावन वास किया था। देव वन के गोपीनाथ जी को श्री राधारमण जी की सेवा सौंपी थी। उन्होंने अपने भाई ग्रहस्थ दामोदर जी को सेवा सौंप दी उन्हीं के वंशज श्री राधारमण लाल जू की सेवा में समर्पित हैं। आपका तिरोधान ई0 सन् 1585 में हुआ था। आपकी समाधि राधारमण मंदिर के पीछे के भाग में स्थित है।

श्री गोपाल भट्ट गोस्वामी समाधि मंदिर, राधारमण मंदिर परिसर, वृन्दावन

श्री गोपाल भट्ट गोस्वामी भजन कुटी, संकेत वट, तहसील छाता

4. श्री दास गोस्वामी (रघुनाथ दास)– ये सम्प्रदाय में दास गुंसाई के नाम से प्रसिद्ध हैं। चैतन्य देव के अलौकिक चरित्र से प्रभावित होकर ही लक्ष्मी के वरद पुत्र रघुनाथ दास ने आध्यात्मिक तृप्ति के लिये परमैश्वर्य और अति सुन्दरी रमणी को गुणवत त्याग दिया था। ये हुगली जनपद के धनिक कायस्थ जमींदार के एकमात्र पुत्र थे। इनका जन्म ई0 सन् 1503 में माना जाता है। शैशव से ही इनके हदय में धार्मिक संस्कार थे। श्री चैतन्य देव के सम्पर्क में आते ही आप परम विरक्त हो गये। ई0 सन् 1519 में मात्र 24 वर्ष की तरुणावस्था में इन्होंने महा निष्क्रमण किया था। अभ्रान्त कष्ट उठाकर ये नीलाचल पहुंचे थे। महाप्रभु इनकी विरक्ति से बड़े प्रभावित थे। इनके आचरण से प्रसन्न होकर अपनी गोवर्द्धन शिला और गुंजामाला इन्हें सौंप दी थी, जिसे वे महाप्रभु के तिरोधान के बाद राधाकुण्ड ले आए थे। कृष्णदास कविराज इनके प्रिय शिष्य थे। आपने ही प्रेरित कर कविराज जी से श्री चैतन्य चरितामृत की रचना कराई थी। आप में अपूर्व भजन निष्ठा थी। राधा-कृष्ण की मानसी सेवा में अहर्निश तन्मय रहते थे।

श्री रघुनाथ दास गोस्वामी

श्री रघुनाथ दास गोस्वामी समाधि स्थल, राधाकुण्ड

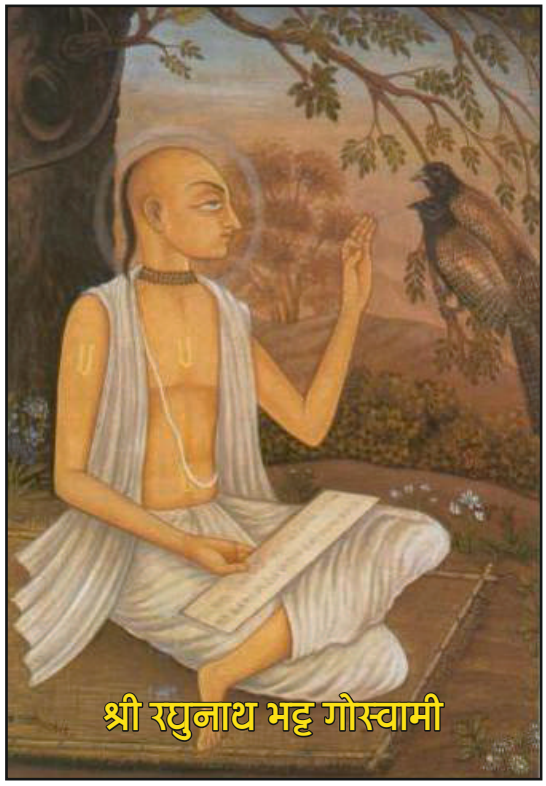
श्री रघुनाथ भट्ट गोस्वामी

आपने प्राय: 49 वर्ष पर्यन्त ब्रजवास किया। आपका नित्य लीला प्रवेश सन् 1523 माना जाता है। राधा कुण्ड पर इनकी समाधि स्थित है। इनकी रचनाएं स्तोत्र के रूप में ही मिलती है।

5. श्री रघुनाथ भट्ट गोस्वामी– आपका जन्म ई0 सन् 1505 में काशी में हुआ था। ई0 सन् 1515 में महाप्रभु जब नीलाचल से वृन्दावन यात्रा पर थे, तब दो माह श्री तपन मिश्र जी जो श्री रघुनाथ भट्ट के पिता थे, आपके ही घर पर रहे थे। आपको श्री चैतन्य देव की सेवा का अवसर प्राप्त हुआ, जिससे आपके अन्तकरण में भक्ति के संस्कार उदभूत होने लगे। आप आठ माह पुरी में रहे, जब माता-पिता का निकुंज गमन हो गया तो आप पुन: महाप्रभु की शरण में पुरी चले गये।

श्री चैतन्य देव के आदेश से आप वृन्दावन चले आये। जन साधारण में भागवत कथाख्यान से ये भक्ति की प्रतिष्ठा और स्वमत का प्रचार करने लगे। आप गोविन्द देव जी के

श्री रघुनाथ भट्ट गोस्वामी समाधि स्थल, चौरासी महंत समाधि, वृन्दावन

मण्डप में बैठकर, वृन्दावन के भक्तों को कथा रस से ये आप्यायित करते थे। राजा मानसिंह को प्रेरित कर गोविन्द देव का विशाल लाल प्रस्तर का मंदिर निर्मित कराया। रूप गोस्वामी इनकी नियमित कथा सुनते थे। आपको श्री मन्महाप्रभु ने तुलसी की माला जो उनकी प्रसादी थी प्रदान की। इसी माला को पहनकर ई0 सन् 1554 में नाम संकीर्तन करते-करते लीला लीन हो गये। आपके द्वारा कोई भी प्रणीत ग्रंथ अद्यतन उपलब्ध नहीं है, किन्तु ब्रज के जन-मानस पर आपका बहुत गहरा प्रभाव था, क्योंकि सत्वर गति से श्रीमद्भागवत कथा का व्यापक प्रचार किया। श्री गदाधर भट्ट इन्हीं के शिष्य थे। इनकी परम्परा में अनेक भागवत वक्ता प्रसिद्ध हुये। ब्रज मण्डल में भागवत कथा पाठ का इन्हें प्रस्तोता कहा जा सकता है।

भजन स्थली श्री रघुनाथ भट्ट गोस्वामी पाद, भट्टजी की हवेली, अठखम्भा, वृन्दावन

श्री जीव गोस्वामी

6. श्री जीव गोस्वामी– ये रूप गोस्वामी के अनुज अनुपम के एकमात्र पुत्र थे। इनका जन्म सन् 1511 में हुआ था। अपनी प्रतिभा के बल पर ये शास्त्र निष्णात हो गये 25 वर्ष की आयु में ये विरक्त होकर वृन्दावन आ गये थे। नित्यानन्द जी की आज्ञा से वृन्दावन आकर रूप गोस्वामी जी से इन्होंने मन्त्र दीक्षा ली और शास्त्र मन्थन किया। भजन और भक्ति ग्रंथों का एकमात्र अनुष्ठान था। आप नैष्ठिक ब्रह्मचारी थे। चैतन्य मत को दार्शनिक भित्ति पर प्रतिष्ठित करने का पाण्डित्य पूर्ण कार्य इन्हीं का था। ये अपने युग के अप्रतिम टीकाकार थे। श्यामानन्द इनके शिष्य थे।

आपने ई0 सन् 1542 में श्री राधा दामोदर की सेवा प्रकट की। श्री गोविन्द देव जी का विशालतम मंदिर ई0 1590 में आपकी ही देख-रेख में सम्पन्न हुआ। उसका मानचित्र शिल्प स्थापत्य प्राय: इन्हीं की सूझ-बूझ थी। आपका तिरोधान 1603 ई0 सन् में वृन्दावन में हुआ था।

श्री जीव गोस्वामी समाधि मंदिर, राधादामोदर मंदिर, वृन्दावन

आपकी समाधि राधादामोदर मंदिर में दक्षिण दिशा में निर्मित है। कभी स्त्री मुख का ये दर्शन न करते थे। कहते हैं कि मीराबाई ने इनसे वृन्दावन आकर भेंट की थी। बादशाह अकबर के अनुनय विनय पर ये आगरा भी गये थे।

श्रीराधा मदनमोहन मंदिर

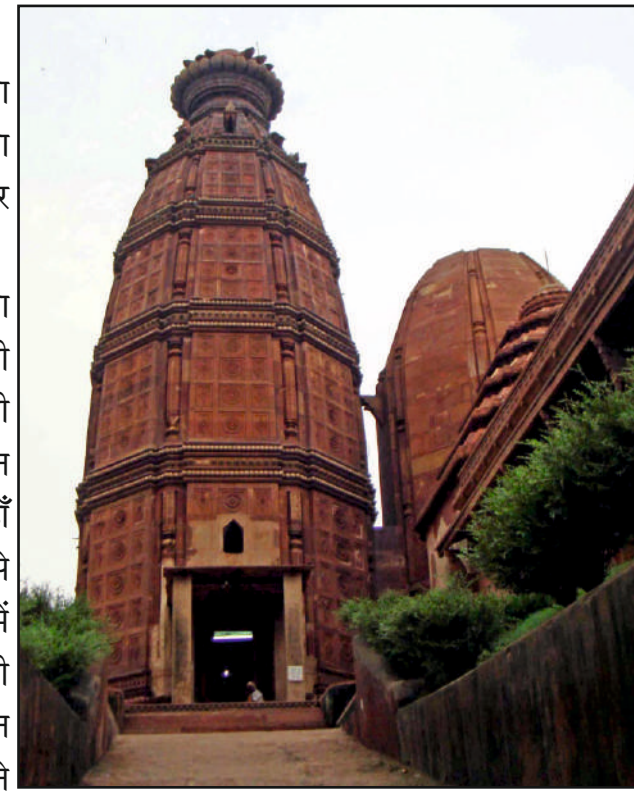

मंदिर की अवस्थिती: श्रीमदन मोहन जी का मंदिर ठाकुर श्रीबाँकेबिहारी मंदिर के निकट परिक्रमा मार्ग में यमुना किनारे में पौराणिक द्वादशादित्य टीले पर स्थित है।

मंदिर से जुड़े संत– चैतन्य महाप्रभु की प्रेरणा पाकर जब षड् गोस्वामियों में प्रमुख सनातन गोस्वामी वृन्दावन आये तो उन्होंने द्वादशादित्य टीले को अपनी साधना स्थली बनाया। श्रीसनातन गोस्वामी प्रतिदिन मधुकरी लेने के लिये मथुरा में चतुर्वेदी ब्राह्मणों के यहाँ जाया करते थे। वहाँ चौबे की पत्नी बड़ी लगन से मदनगोपाल की सेवा करती थी। एक दिन स्वप्न में मदन गोपाल ने दर्शन देकर अपने को सनातन गोस्वामी को सौंप देने को कहा। अगले दिन जब सनातन गोस्वामी मधुकरी लेने पहुँचे तो मदन गोपाल हठ करने लगे कि हम आपके साथ चलेंगे। अलोनी (बिना नमक के) रोटी खाने की शर्त स्वीकार कर लेने पर सनातन गोस्वामी मदन गोपाल को अपने साथ वृन्दावन ले आये और द्वादशादित्य टीले पर एक झोपड़ी में उन्हें विराजमान करा दिया।

मंदिर का इतिहास– मदन मोहन मंदिर का निर्माण कैसे हुआ इसका कथा प्रसंग इस प्रकार है कि जब नित्य-प्रति अलौनी बाटी खाते-खाते मदन गोपाल ऊब गये तो एक दिन सनातन गोस्वामी से बोले "अरे बाबा कबहूँ तौ नमक ऊ दियौ कर अलोनी रोटी गले में चुभै।" इस बात को सुनकर सनातन गोस्वामी बोले लाला हमने तो पहले ही कही हमारे पास कछु नाय। आज तू नमक माँग रहयौ है, कल लड्डू-पूरी मागेंगो। जाते तो तू वापस चल्यौ जा नाय तौ अपनौ काम आप कर। यह सुनकर मदन गोपाल ने कहा कि ठीक है मैं अपने आप ही व्यवस्था कर लूंगौ। अगले दिन प्रातः काल जब मुल्तान का एक व्यापारी पानी के जहाज पर माल लादे यमुना में से जा रहा था तब उसकी विशाल नौका टीले के निकट फंस गयी। खोजते-खोजते जब वह व्यापारी सनातन गोस्वामी की कुटिया में पहुँचा और उनसे अपनी व्यथा कही तब श्रीसनातन ने मदनगोपाल के विग्रह की ओर संकेत करके कहा यही तेरी नाव निकालेंगे। मदनमोहन की कृपा से रामदास की नाव निकल गयी। उसने संकल्प लिया कि व्यापार से जितना भी धन कमायेगा उससे मदन मोहन के मंदिर का निर्माण करवायेगा। इस प्रकार रामदास कपूर ने यह मंदिर सनातन गोस्वामी के आराध्य ठाकुर श्रीमदनमोहन के लिये बनवाया।

महत्वपूर्ण तथ्य– यह मंदिर तत्कालीन अन्य मंदिरों के समान लाल बलुआ पत्थर से निर्मित है। स्थापत्य की दृष्टि से वृन्दावनी मंदिरों में यह अनूठा एवं सर्वाधिक प्राचीन है।

मंदिर तक पहुँचने के लिए तीन ओर से मार्ग बने हैं, जो क्रमशः पूर्व, पश्चिम व दक्षिण की ओर निर्मित हैं। प्राचीनकाल में मंदिर में प्रवेश करने के लिये दक्षिणी द्वार का प्रयोग किया जाता था, जिसे सिंह पौर द्वार के नाम से भी जाना जाता था।

वास्तु का प्रकार– द्वार का स्वरूप मुगल स्थापत्य के अनुरूप है लेकिन इसकी सज्जा हिन्दू वास्तु के अनुसार की गयी है। द्वार के मध्य में कमलाकृति है तथा दोनों ओर वल्लरियाँ हैं। द्वार के दाहिने ओर संजीवनी बूटी लाते हनुमान जी व बांयी ओर करबद्ध मुद्रा में श्रीगरुण जी का अंकन है। द्वार के ऊपरी भाग पर सिंह की दो प्रतिमायें व गज प्रतिमायें भी अवस्थित हैं। सिंह प्रतिमायें बड़ी हैं व दूर से ही दिखलायी पड़ती हैं अतः इस द्वार को सिंहपौर कहा जाता है। द्वार का दूसरा भाग एक वर्गाकार कक्ष के समान है। इसके अनन्तर अन्य द्वार भी हैं जिस पर कदली के वृक्ष तथा दन्तावद्ध गज की आकृतियाँ हैं। सिंह पौर द्वार के ऊपर शिखर है जो विजय नगर के कमल महल के शिखर के समान है। इसको कचहरी बाड़ी कहा जाता था यहाँ लेखन संबंधी कार्य होता था। मुख्य मंदिर में गर्भगृह, मण्डप व जगमोहन सम्मिलित हैं। मण्डप की लम्बाई लगभग 60 फुट तथा चौड़ाई 20 फुट है। इसका मुख्य द्वार पूर्व की ओर है जो सिरदल युक्त है। यह पुष्प व ज्यामितिय आकृतियों से अंलकृत है। द्वार के ऊपरी चरण में मेहरावी गवाक्ष विद्यमान हैं। मण्डप का वाह्य स्वरूप पाश्चात्य गोथिम शैली का है। यह शैली उत्तर भारत में देखने को नहीं मिलती। मण्डप के उत्तर तथा दक्षिण में तीन–तीन मेहराबी द्वार हैं। मण्डप की छत्त झोपड़ी नुमा है। सन् 1873 के लगभग मथुरा के तत्कालीन जिलाधिकारी एफ.एस. ग्राउस के अनुसार इसकी छत्त का कुछ हिस्सा गिर गया था जिसका पुनः निर्माण उनके द्वारा कराया गया। मंदिर का जगमोहन वर्गाकार है। इसकी लम्बाई चौड़ाई लगभग 20 फुट है। जगमोहन में पूर्व तथा पश्चिम के द्वारों के अलावा और कोई वातायन नहीं है। जगमोहन के द्वार पर विभिन्न प्रकार की नक्काशी की गयी है। द्वार के दोनों ओर निर्मित आलों में गज प्रतिमायें स्थापित हैं, जो अब खण्डित हो चुकी हैं। जगमोहन का शिखर सिंह पौर द्वार के समान ही है। गर्भगृह में दो द्वार हैं जो क्रमशः पूर्व व दक्षिण दिशा में हैं। गर्भगृह वर्गाकार है तथा इसके ऊपर निर्मित शिखर ग्रीवा भाग से खण्डित है अतः ग्रीवा व आमलक का अभाव है। गर्भगृह से ऊपर की ओर शिखर घटते क्रम में है, जिससे लम्बवत रेखाओं का निर्माण होता है। ऐसा शिखर रेखा शिखर कहलाता है। इस शिखर में नक्काशी का अभाव है। मुख्य गर्भगृह के दक्षिण की ओर अन्य शिखर युक्त मंदिर है। बनावट की दृष्टि से यह शिखर भिन्न है। चौखट पर चारों ओर बेलवूटे विद्यमान हैं। शिखर वृत्ताकार है तथा मूल रूप से ईटों से निर्मित है। ग्रीवा से नीचे चारों दिशाओं की ओर मुँह किये हुये सिंह की प्रतिमायें स्थापित हैं। ग्रीवा के उर्ध्व भाग पर कमल शीर्ष आमलक विद्यमान हैं। यह भी रेखीय शिखर है किन्तु इसमें अंग शिखरों का अभाव है। उड़ीसा की स्तूप शैली में बना यह मंदिर सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करता है। किवदंती है कि कभी इस मंदिर के शिखर पर दो स्वर्ण कलश थे, जिसे यमुना पार स्थित माँट गांव का चोर चुराकर ले गया। सन्ध्या आरती के समय बजने वाले घंटे–घड़ियालों की ध्वनि में चोर ने मंदिर के पीछे की दीवार पर कीले गाड़ी और ऊपर शिखर पर चढ़कर कलश लेकर यमुना में कूद गया। तभी से कहा जाने लगा–

"धनि धनि माँट गाँव के चोर
वृन्दावन को ऐसे चितवत जैसे चन्द चकोर॥"

मुगल बादशाह औरंगजेब की धर्मान्ध नीति के कारण सन् 1669 में मदन मोहन जी के श्रीविग्रह को पहले जयपुर तथा उसके उपरांत करौली ले जाया गया। आज मदनमोहन जी का श्री विग्रह करौली के देवालय में सेवित है। कोलकाता मुर्शिदाबाद के भक्त नंददास बसु ने 1819 ई. में प्राचीन मंदिर के समीप ही नये मंदिर का निर्माण करा कर उसमें ठाकुर मदनमोहन के प्रतिभू विग्रह की प्रतिष्ठा करायी। इस मंदिर में श्रीराधारानी, श्रीललिता जी एवं श्रीविशाखा जी के विग्रह भी प्रतिष्ठित हैं। मंदिर में सात आरती, पाँच भोग की सेवा का विधान है। कार्तिक मास में मंगला आरती होती है। मंदिर में उत्सव मनाने की सुदीर्घ परंपरा है। वृन्दावन में निकलने वाली ब्रज चौरासी कोस की यात्रा का प्रारम्भ यहीं से होता है। चन्दन यात्रा, जल यात्रा (ज्येष्ठ पूर्णिमा) सनातन गोस्वामी तिरोभाव उत्सव (मुड़िया पूर्णिमा) झूलनोत्सव, रक्षाबंधन, दीपावली, अन्नकूट, व्यंजन द्वादशी (छोटा अन्नकूट) आदि उत्सव मनाये जाते हैं।

ठाकुर मदनमोहन को चावल, खीर, माखन मिश्री, फल-मेवा, सब्जी-भाजा, फुलका-रोटी के साथ-साथ अलौना बाटी का भी भोग निवेदित किया जाता है।

गौड़ीय सम्प्रदाय के अनुसार ठाकुर की माधुर्य भाव भक्ति की प्रधानता के साथ सेवा की जाती है। ठाकुर जी के समक्ष नित्य प्रति कीर्तन करने की परंपरा है।

मदनमोहन मंदिर के समीप ही समाधि वाड़ी है, जहाँ सनातन गोस्वामी जी की समाधि स्थित है। इसी स्थल में विश्व की एक मात्र ग्रंथ समाधि के भी दर्शन होते हैं। समाधि बाड़ी से पहले गौड़ीय संत सूरदास मदनमोहन की समाधि भी स्थित है। परिसर में द्वादश आदित्य पीठ है एवं नीचे की ओर ढलान पर शीतला मंदिर की ओर राजपूत कालीन प्राचीन बारहवी शताब्दी का सूर्य मन्दिर है। 1975 तक सूर्य मन्दिर में सूर्य नारायण की प्रतिमा पत्नियों सहित विराजमान थी।

श्री राधागोविन्द देव मंदिर

वृन्दावन में वर्तमान समय में उपस्थित मंदिरों में श्रीगोविन्द देव जी का मंदिर प्राचीन है। श्रीगोविन्द देव मंदिर वृन्दावन नगर निगम के कार्यालय के पास गोविन्द घेरा मोहल्ले में गोमा टीले पर बना हुआ है। टीले के ऊपर बना होने के कारण यह स्वाभाविक रूप से आस-पास के क्षेत्रों से ऊँचाई पर स्थित है। चैतन्य महाप्रभु के पार्षद षड् गोस्वामीयों में से रूप गोस्वामी गोमा टीले पर रहकर अपनी साधना करते थे। इसी गोमा टीले से उन्हें श्रीगोविन्द देव के विग्रह की प्राप्ति हुयी। गर्ग संहिता के अनुसार भगवान श्रीकृष्ण के प्रपौत्र ब्रजनाभ ने श्रीगोविन्द देव के श्रीविग्रह का निर्माण कर देवालय में विराजमान कराया। श्रीरूप गोस्वामी को उसी विग्रह की प्राप्ति हुई।

अकबर के शासनकाल में जब धार्मिक सहिष्णुता तथा सर्वधर्म समभाव को प्रश्रय मिला तो इसका प्रभाव उनके दरबारियों पर भी दृष्टिगोचर हुआ। आम्बेर का राजा मानसिंह धार्मिक प्रवृत्ति का होने के साथ-साथ रूप गोस्वामी से बेहद प्रभावित था। राजा मानसिंह ने सन् 1590 के लगभग श्रीगोविन्द देव जी के मंदिर का

निर्माण कराया। राजा मानसिंह द्वारा इस मंदिर के निर्माण कराये जाने का प्रमाण मंदिर के उत्तरी बाह्य भाग पर अधिष्ठान से लगभग 12 फीट की ऊँचाई पर अंकित प्रस्तर अभिलेख है। जिस पर स्पष्ट रूप से अंकित है कि "अकबर शासन काल के 34 वें वर्ष में महाराजा पृथ्वीराज के कुल के महाराजा भगवान दास के पुत्र महाराजा मानसिंह ने वृन्दावन के योगपीठ स्थल श्रीगोविन्द देव जी के विग्रह के लिये यह मंदिर बनवाया। इस मंदिर का निर्माणाध्यक्ष कल्याण दास तथा उसका सहायक माणिक चन्द्र चोपड़ा तथा शिल्पी गोविन्द दास और कारीगर गोरखदास थे। इस प्रकार अभिलेख से स्पष्ट हो जाता है कि महाराजा मान सिंह ने इस मंदिर का निर्माण कराया। अत: इस बात का भी सहज अनुमान लगाया जा सकता है कि इसे राजकीय संरक्षण प्राप्त था। राजा मान सिंह द्वारा सन् 1608 में दिये गये एक आदेश में यह उल्लेख प्राप्त होता है कि गोविन्द देव मंदिर को प्रतिदिन एक अशरफी (मुहर) एवं एक रूपये दिये जाये। जिसमें मुहर को श्रीगोविन्द देव मंदिर के खर्च के लिये एवं एक रूपये को उसके पुजारियों पर व्यय किया जाता था। इस बात से गोविन्द देव मंदिर के तत्कालीन वैभव का स्वत: ही अनुमान लगाया जा सकता है।

अकबर के नवरत्नों में से एक राजा मानसिंह ने श्रीगोविन्द देव मंदिर का निर्माण पूरी तल्लीनता के साथ कराया। उन्होंने सभी राजकीय संसाधनों का समुचित प्रयोग किया। मंदिर के निर्माण के लिये व्यापक स्तर पर शिल्पियों एवं कारीगरों को वृन्दावन लाया गया होगा क्योंकि उस समय वृन्दावन की जनसंख्या इतनी नहीं थी कि व्यापक श्रमिक उपलब्ध हो सकें। इस मंदिर के निर्माण में वे ही शिल्पी लगे होंगे जिन्होंने आगरे के किले व फतेहपुर सीकरी में निर्माण का कार्य किया होगा। यही कारण है कि उन भवनों का प्रभाव श्रीगोविन्द देव मंदिर में दृष्टि गोचर होता है। मंदिर का अधिष्ठान 12 फुट ऊँचा है। अधिष्ठान तक पहुँचने के लिये प्रस्तर की सीढ़ियां बनी हैं। सामने से देखने पर मंदिर तीन तलों में निर्मित जान पड़ता है। मुख्य द्वार के दोनों ओर चार-चार स्तम्भ है, जिनके आधार पर ज्यामितीय आकृति उकेरी गयी है। शीर्षभाग पर कीर्तिमुख व मंगल घट की आकृतियाँ है। यही बनावट शेष दो तलों पर भी है। मंदिर में मुख्य द्वार के अतिरिक्त प्रवेश करने के लिये उत्तर तथा दक्षिण में पाँच-पाँच द्वार विद्यमान हैं। मंदिर का मण्डप वर्धित होकर महामण्डप का आकार ग्रहण किये हुये है। महामण्डप के मध्य भाग जिसे मध्य मण्डप कहा जाता है। उन स्तम्भों पर आधारित है इसकी प्रमुख विशेषता स्तम्भों पर उकेरी गयी घंटे की आकृतियां हैं जो अन्य स्तम्भों पर नहीं हैं। मध्य मण्डप की छत्त के बीचोंबीच अधोमुखी सहस्र दल कमल को उकेरा गया है। यह कमल कमानीदार आरों पर टिका है जहाँ यह कमानीदार आरे मिलते है वहाँ

कमल कलियों की आकृति उकेरी गयी है। महामण्डप व जगमोहन के मध्य एक द्वार है जिसके ऊपर श्रीकृष्ण की गोवर्धन लीला एवं चौखट पर श्रीकृष्ण की ब्रज लीलाएँ उत्कीर्ण हैं। वहीं दाहिनी तरफ गोविन्द मंदिर अष्टक संस्कृत रचना को शिलालेखों में उत्कीर्ण किया गया है। जिसमें मंदिर के संदर्भ में ऐतिहासिक जानकारी प्राप्त होती है।

जगमोहन में केवल चार द्वार विद्यमान हैं। जगमोहन की छत्त में भी महामण्डप की तरह अधोमुखी कमल उकेरा गया है किन्तु यह आकार में छोटा है। गर्भगृह के द्वार के सिरदल पर गजाकृति एवं मंगलघट व चौखट पर सुंदर बेल-बूटे की नक्काशी की गयी है। मंदिर गर्भगृह के उत्तर-दक्षिण के द्वार मंदिर के गर्भगृह में खुलते हैं। मंदिर के उत्तर में वृन्दा देवी तथा दक्षिण में योगमाया पाताल देवी का मंदिर है। इन मंदिरों के मुख्य द्वार पूर्व दिशा की ओर खुलते हैं। मंदिर के तीन बाह्य स्वतंत्र पृष्ठों पर ऊपर की ओर अत्यंत आकर्षक गवाक्ष बने हैं, जिन्हें मानवाकृतियों के साथ-साथ ग्वाला, गोपिकाओं, भद्र पुरुषों, पशु- पक्षियों के अंकन में सज्जित किया गया है।

मंदिर के पृष्ठभाग में परवर्ती कालीन चौखण्डी (छतरी) है। पिरामिडाकार इस छतरी का निर्माण इस पर लिखे अभिलेखानुसार 1636 ई. में शाहजहाँ के काल में राजा अमर सिंह के पुत्र राजा भीम जी की रानी रम्भावती ने करवाया। गोविन्द देव मंदिर के बारे में उल्लेखनीय है कि इसके प्रत्येक द्वार पर श्रीगणेश जी की प्रतिमा उकेरी गयी है। मंदिर का अग्रभाग हिन्दू स्थापत्य के गुणों को दर्शाता है जबकि उत्तरी-दक्षिणी द्वार व आंतरिक भागों पर मुगल स्थापत्य का प्रभाव देखने को मिलता है। इन मिश्रित शैलियों का प्रभाव इस प्रकार का है, जो मंदिर की भव्यता में बढोत्तरी करता है।

गौड़ीय संप्रदाय से संबंधित इस मंदिर का मूल विग्रह अब जयपुर स्थित गोविन्द देव मंदिर में प्रतिष्ठित है। वृन्दावन में प्रतिभू विग्रह को प्रतिष्ठत किया गया है। इस मंदिर में सात आरती व पाँच भोग की सेवा का विधान है। प्राचीन मंदिर के भग्न हो जाने के उपरांत कोलकाता के भक्त नंददास बसु द्वारा प्राचीन मंदिर के समीप ही संवत् 1877 तद्नुसार सन् 1820 में ठाकुर श्रीगोविन्द देव जी के एक नवीन मंदिर का निर्माण कराया गया। इस मंदिर में गोविन्द देव जी का एक प्रतिभू विग्रह स्थापित किया गया। यह मंदिर भी वास्तुकला की शैली से अत्यंत आकर्षक एवं भव्य है। खुला आंगन और विशाल जगमोहन सब को मोह लेता है।

श्री गोपीनाथ जी का मंदिर

यह मंदिर राधारमण मंदिर के समीप गोपीनाथ घेरा में है। इस मंदिर का निर्माण अकबर के समय में रायसेन नामक राजपूत सरदार ने राजा मानसिंह की अनुमति से कराया। रायसेन कछवाहा राजपूतों की शेखावटी शाखा से संबंध रखता था। कहते हैं कि अकबर के शासन काल में इसने अफगानों के आक्रमण के समय अपूर्व वीरता का परिचय दिया। इससे प्रसन्न होकर अकबर ने उसे जागीर एवं मनसबदारी प्रदान की। गदाधर पंडित के शिष्य मधु पंडित को श्रीगोपीनाथ जी का श्रीविग्रह प्राप्त हुआ, उन्होंने ही वज्रनाभ द्वारा स्थापित गोपीनाथ जी की पुनः प्रतिष्ठा की। अनेक वर्षों तक मधु पंडित ने अपनी भजनकुटी में ही ठाकुर गोपीनाथ की सेवा की। गोपीनाथ मंदिर के निर्माण का सुनिश्चित समय ज्ञात नहीं है लेकिन विभिन्न विवरणों से यह ज्ञात होता है कि मंदिर के निर्माण का समय अकबर के अंतिम और जहाँगीर के आरम्भिक समय के मध्य का रहा होगा। स्थापत्य की दृष्टि

से यह मंदिर वृन्दावन के अन्य मंदिरों से भिन्न है। मंदिर का मुख्य द्वार पूर्व की ओर गोपीनाथ बाजार में है। यह अत्यंत खण्डित अवस्था में है। सिर दल के मध्य भाग में गणेश जी की प्रतिमा उत्कीर्ण है। मंदिर जिस अधिष्ठान पर निर्मित है वह लगभग पूर्ण रूप से मिट्टी में दब चुका है। वर्तमान में मंदिर का जगमोहन, गर्भगृह एवं उसके ऊपर का शिखर ही शेष है। मंदिर के तलविन्यास को देखने से पता चलता है कि यह मंदिर गिरथ शैली में निर्मित था, जिसमें मुख्य मंदिर के साथ उत्तर व दक्षिण में भी मंदिर रहे होंगे। वर्तमान में उत्तर की तरफ वाले मंदिर का कोई अवशेष नहीं है जबकि दक्षिण दिशा वाले मंदिर में खण्डहर विद्यमान है। जगमोहन की चारों दिशाओं में द्वार है। मुख्य द्वार पूर्व की ओर है, इसकी सिरदल टूट गयी है चौखट के चारों ओर बेल-बूटों का अंकन है। चौखट के आधार पर दोनों तरफ एक-एक मानवाकृति उकेरी गयी है। द्वार का छज्जा खडिंत अवस्था में है। छज्जे के ऊपरी भाग में दो गज प्रतिमाएँ एक दूसरे के सम्मुख उत्कीर्ण है। जगमोहन का आधार वर्गाकार है जो लम्बाई एवं चौड़ाई में 20 फुट का प्रतीत होता है। जगमोहन के ऊपरी गुम्बद वाला भाग 12 स्तम्भों पर टिका है।

गर्भगृह के द्वार पर घनी नक्काशी की गयी है किन्तु वर्तमान समय में यह बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गयी है। गर्भगृह वर्गाकार है यह लम्बाई चौड़ाई में जगमोहन से बड़ा है। गर्भगृह के पूर्वी द्वार के अतिरिक्त दो गवाक्ष दक्षिणी व उत्तरी दिशा में भी हैं। गर्भगृह के ऊपर निर्मित शिखर सुरक्षित अवस्था में है। यह अत्यंत भव्य है। तात्कालीन मंदिरों के शिखर से इतर इस मंदिर का शिखर पिरामिडाकार है, इसके चारों पृष्ठों पर मध्य में तीन-तीन लघु शिखर विद्यमान हैं तथा चारों कोनों पर भी तीन-तीन शिखर स्थित है। शिखर की ग्रीवा वर्गाकार आधार पर प्रतिष्ठित है। ग्रीवा पर चारों ओर गोलाकार मुखाकृति के रूप में सूर्य का अंकन है तथा पूर्ण सुरक्षित है इसके ऊपर मंगल कलश विद्यमान हैं।

औरंगजेब के शासनकाल में जब धार्मिक स्थलों के देवालयों को क्षति पहुँचायी जा रही थी तब श्रीगोपीनाथ जी के विग्रह को भी जयपुर ले जाया गया। बाद में भगवद प्रेरणा से चौबीस परगना जिला के निवासी एक बंगाली कायस्थ भक्त नंदकुमार बसु ने सन् 1821 में प्राचीन मंदिर के समीप ही नवीन मंदिर का निर्माण करा कर उसमें ठाकुर गोपीनाथ के प्रतिभू विग्रह को स्थापित किया। मंदिर में ठाकुर गोपीनाथ जी के वाम भाग में श्रीनित्यानंद प्रभु की पत्नी श्री जह्नवा माता विराजमान हैं। दायीं ओर श्रीराधा जी की छोटी मूर्ति व ललिता सखी के दर्शन हैं। पास ही एक अलग आसन पर श्रीगौरांग महाप्रभु का विग्रह है। ठाकुर गोपीनाथ के वाम भाग में जह्नवा माता की प्रतिमा को लेकर एक कथा प्रचलित है। जब जह्नवा माता वृन्दावन आयी तो उन्होंने गोपीनाथ जी

के पास श्रीराधाजी की छोटी मूर्ति को देखकर सोचा कि अगर राधा की मूर्ति बड़ी होती तो युगल स्वरूप सुंदर लगता। तब प्रभु ने उन्हें स्वप्नादेश कर एक बड़ी मूर्ति बनवाने का आदेश दिया। शीघ्र ही नयन नामक मूर्तिकार द्वारा राधाजी की बड़ी मूर्ति बनवाकर वृन्दावन भेजी गयी। यह मूर्ति गोपीनाथ जी के वाम भाग में प्रतिष्ठित की गयी। मान्यता है कि स्वयं जह्नवा माता उस श्रीविग्रह में समाहित हो गयी। गौड़ीय संप्रदाय का यह मंदिर वृन्दावन के सप्त देवालयों में से एक है। मंदिर में सात आरती पाँच भोग की सेवा पद्धति विद्यमान है। मंदिर में जगन्नाथ जी का वार्षिकोत्सव मनाया जाता है व रथयात्रा निकाली जाती है। मंदिर में सभी उत्सव आनन्द पूर्वक सम्पन्न होते हैं।

श्रीराधारमण लाल जू

श्रीगोपाल भट्ट गोस्वामी वृन्दावन के षड् गोस्वामियों में अन्यतम थे। इनकी श्रीवृन्दावन की चिन्मय रसभूमि अप्रतिम भक्ति साधना उस समय उत्फुल्लित होकर साकार हो उठी जब सन् 1542 की वैशाखी पूर्णिमा के चन्द्र दिवस की महनीय वेला में तारा पथ के सभी ग्रह नक्षत्र अनुकूल थे, उस प्रमुदित वातावरण में विशाखा नक्षत्र द्युतिमान था। यामिनी का अन्तिम प्रहर प्रभात प्रशस्ति के लिये उन्मुख हो गया। इसी शुभ लग्न-योग के मध्य श्रीगोपाल भट्ट गोस्वामी जी के अभिप्सित वाँछा कल्पतरु का आविर्भाव दामोदर शालग्राम शिला से हुआ। भक्त की भावना से पल्लवित भावों का साक्षात् स्वरूप श्रीराधारमण लाल जू के अपूर्व वपु पृष्ठ पर दो ऋजु रेखायें अंकित हैं, उभय स्कन्द चक्रों से सुशोभित हैं, अतिकान्त श्यामवर्ण पर बुद्धि उज्जवल नेत्र कृपा कटाक्ष से संदर्शित हैं, मुखश्री की मोहिनी छटा गोविन्द देव का स्मरण कराती है तो वक्ष: स्थल गोपीनाथ जी के श्रीविग्रह को मानस पटल पर उपस्थित कर देता है और श्रीचरण कमलों की अनुपम शोभा श्रीमदन मोहन जी की समानता को प्रतिष्ठित करने लगती है। समूचे श्रीश्रीविग्रह का परिमाप सोलह अंगुल का है।

जिस स्थल पर श्रीराधारमण जू का श्रीविग्रह आविर्भूत हुआ था उस स्थल को "दोल" कहते हैं। इसी स्थल की सन्निधि में सम्प्रदाय के अनन्य भक्त ने एक लघु किन्तु शोभनीय मंदिर निर्माण कराया। यहाँ सन् 1693 पर्यन्त श्रीराधारमण लाल जू की सेवा का क्रम परम्परानुसार चलता रहा। इस मंदिर के निर्माण की कहानी इस प्रकार मिलती है कि-

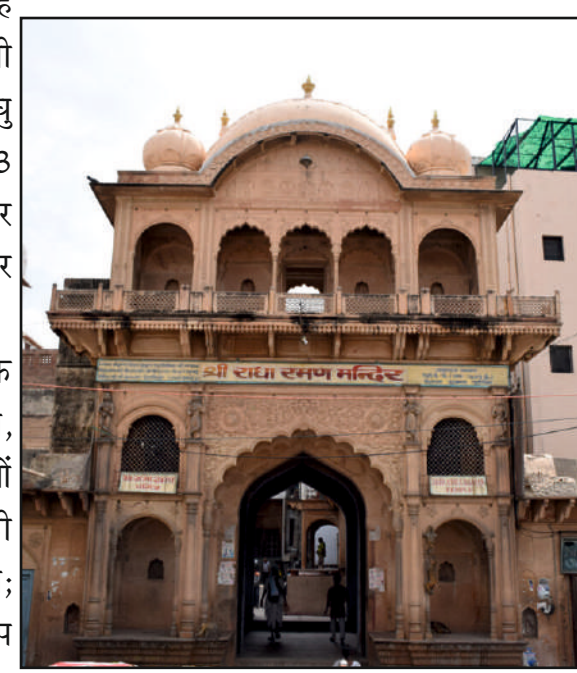

मंदिर सेवायत श्रीचैतन्य दास गोस्वामी जी का एक अग्रवाल शिष्य अत्यन्त दयनीय स्थित में दिल्ली में रहता था, एक बार गोस्वामी जी दिल्ली गये; तो गोस्वामीजी के चरणों में अनुगत होकर उसने अपनी व्यथा गुरुदेव को निवेदन की इस पर गोस्वामी जी ने उन्हें बांस के व्यापार के लिये कहा; और एक छड़ी दी इस छड़ी को शिष्य ने आशीर्वाद स्वरूप

ग्रहण किया और बांस का व्यापार कर अपार धन अर्जित किया। एक लम्बे समय के अन्तराल से गुरुजी के पास आया और अर्जित संपत्ति का एक बड़ा भाग उनके चरणों में निवेदित किया किन्तु महामना गुरुदेव ने स्वयं ग्रहण न कर एक नया मंदिर निर्माण करने के लिये ठाकुर जी को अर्पण करने की आज्ञा दी अत: उस अग्रवाल शिष्य ने वहीं उसी परिसर में सुन्दर मंदिर का निर्माण कराकर ठाकुरजी को अनेक रत्न जड़ित आभूषण भी श्रीचरणों में समर्पित किये। इस मंदिर में श्रीराधारमण लालजू लगभग 125 वर्ष पर्यन्त विराजमान रहे। इस मंदिर की शिल्प कला राजस्थानी शैली से सुशोभित है।

ई. सन् 1822 में श्रीराधागोविन्द जी गोस्वामी के शिष्य लखनऊ के सुप्रसिद्ध जौहरी शाह बिहारी लाल जी ने उक्त प्राचीन मंदिर के स्थान से संलग्न भूखण्ड पर जहाँ कभी यमुना की झील थी, वहाँ एक धनुषाकार मेहराब दोनों ओर द्वार पालों से सुशोभित चौखण्डियाँ निर्मित है, आगे पर्याप्त चबूतरा बना हुआ है। पूर्वाभिमुख इस मंदिर के निर्माण में पाँच वर्ष का समय लगा। अर्थात् 1827 ई. सन् में माघ शुक्ला पंचमी को इस नूतन मंदिर का पाटोत्सव अपार भक्तों की समुपस्थिति में सम्पन्न हुआ। आपने श्रीजी स्वर्ण-रजत सिंहासन, स्वर्ण आभूषण तथा रजत पात्र भी ठाकुर जी को अर्पण किये। तत्पश्चात् अन्य भक्तों द्वारा मंदिर परिक्रमा तथा प्राचीन सदर द्वार को समाहित कर नवीन कला वैभव पूर्ण भव्य वृहद् द्वार का निर्माण हुआ।

मंदिर में विराजमान श्रीराधारमण लाल जू का श्रीविग्रह कृष्ण स्वरूप है, यहाँ मंदिर में भक्तों के लिये गद्दी सेवा का विधान है। श्रीचैतन्य देव जी द्वारा श्री गोपाल भट्ट जी को प्रदत्त डोर, कोपीन, वहिर्वास तथा एक काष्ठासन मंदिर में आज भी विराजित हैं। मंदिर चैतन्य सम्प्रदाय के सप्त देवालयों में परिगणित है। यहां भोग-राग सेवा पद्धति भाव-राग आदि भी उसी प्रकार नियमित सम्पन्न होती हैं।

वर्षभर में 34 उत्सव अति उल्लास के साथ मनाये जाते हैं। जिनमें प्रमुख है- चैत्र शुक्ला रामनवमी, पुष्प दोलोत्सव, अक्षय तृतीया, श्री नृसिंह जयन्ती, राधारमण जयन्ती, ज्येष्ठ मास में जलयात्रा, रथयात्रा, गुरुपूर्णिमा, हरियाली तीज, अहोई अष्टमी, धनतेरस, दीपावली, गोवर्द्धन पूजन, गोपाष्टमी, देवोत्थान एकादशी, वसन्त पंचमी, होलिकोत्सव, डोलोत्सव आदि के साथ गोपाल भट्ट गोस्वामी जी का तिरोभाव, तिथि- श्रावण कृष्णा पंचमी को उत्सव रूप में ही मनाई जाती है।

गौड़ीय वैष्णव जनों की उपासना कान्ता भाव से ही अभिप्रेत है। उनकी आराधना का वास्तविक उत्स श्रीराधाकृष्ण हैं। शास्त्र के अनुसार नाम और नामी अभिन्न हैं, भगवत नाम को ही शास्त्र अनुसार आराधन योग्य स्वीकार किया गया है इसलिये श्रीराधा की नाम सेवा के रूप में साक्षात् राधारानी राधारमण जू के साथ पूजित हैं। यहाँ की सात आरतियों का क्रम इस प्रकार है- प्रात: ब्रह्म वेला में मंगला आरती होती है। स्नान आदि के बाद शृंगार किया जाता है। तत्पश्चात् धूप आरती होती है, बाल भोग आता है, जिसमें मोहन भोग, कुल्हिया मिश्री माखन सेवाफल दूध दही धराया जाता है। शृंगार आरती के बाद दर्शन खुले रहते हैं। राजभोग आरती जिस में दाल चावल रोटी, दही पकोड़ा सब्जी आदि का भोग लगता है। मध्याह्न शयन होता है।

सांय कालीन सेवा में ठाकुरजी का उत्थापन कर धूप आरती बाल भोग जैसा ही भोग लगता है। दर्शन खुले रहते हैं। संध्या आरती के बाद दर्शन बन्द हो जाते हैं।

औलाई – वपु मार्जन किया जाता है, इत्र सेवा अंग श्री पर की जाती है। ऋतु अनुसार। इसके पश्चात् बहुत ही हल्का शृंगार करने के बाद औलाई के दर्शन होते हैं मात्र 10 से 15 मिनट तक ही होते हैं। विशेष उत्सव दिवसों में औलाई के दर्शन नहीं होते हैं। उस स्थान पर संध्या आरती से पूर्व उत्सव आरती होती है। औलाई दर्शन के बाद फिर व्यारु भोग आता है। पक्की रसोई का प्रसाद है। फिर भोग के दर्शन होते हैं। उसके बाद दूध भोग आता है। दूध भोग के बाद शयन आरती होती है। पट बन्द होने से पूर्व दो पान के बीड़ा तथा मिट्टी का बना जल से भरा पात्र रखा जाता है। सभी भोगों के पश्चात् पान का भोग लगता है।

यहाँ मंदिर की रसोई में ही भोग बनता है, यहाँ भक्तों द्वारा आगत कच्ची सामग्री ही स्वीकार की जाती है।

आज भी लकड़ी और कण्डे का प्रयोग होता है। 450 वर्ष प्राचीन अखण्ड अग्नि प्रज्वलित है, यहाँ माचिस के अतिरिक्त आलू, गोभी, टमाटर गाजर, आदि प्रयोग नहीं होता, लाल मिर्च हींग हरी मिर्च आदि भी वर्जित हैं। प्रत्येक भोग में कुल्हिया का प्रयोग होता है। शिखर पर पीतल का ध्वज लगा हुआ है। राग सेवा प्रति दिन प्रात: से लेकर शयन पर्यन्त होती है। उत्सव के अनुरूप पद गान होता है। लगभग एक परिवार की सेवा आने का चक्र ढाई वर्ष का है। आचार-विचार और वैदिक परम्परा से सेवा होती है। यहाँ का विशेष भोग कुल्हिया इसलिये लगाया जाता है कि श्री माधवेन्द्रपुरी व श्रीचैतन्य देव को यह प्रसाद अति प्रिय था। अत: यहाँ प्रत्येक भोग के साथ कुल्हिया भोग अवश्य लगाया जाता है।

श्रीराधा दामोदर मंदिर

श्रीमन्महाप्रभु चैतन्य देव के प्रिय पार्षद जीव गोस्वामी के सेव्य ठाकुर श्रीराधा दामोदर जी का श्रीविग्रह भक्तों की भावनाओं को आह्लादित कर उन्हें भक्ति प्रदान कर तारन हार है। यह मंदिर यमुना किनारे सेवा कुंज मौहल्ला में स्थित है। यहीं श्रीजीव गोस्वामी निवास करते थे। जब श्रीजीव गोस्वामी वृन्दावन पधारे तो उनके हृदय मंदिर में विराजमान भगवान श्रीकृष्ण का श्रीविग्रह मानस पटल पर उभरने लगा और वे अपनी भावना श्रीविग्रह की मानसी सेवा में दत्त चित्त ध्यानरत् रहते थे किन्तु साक्षात् सेवा का भाव भी प्रगाढ़ हो, उन्हें अधीर करने लगा। भाव रूप भगवान अपने भक्त की पुकार को सुन रहे थे। प्रभु जब अपने भक्त पर कृपा करते हैं तो किसी भी माध्यम से प्रेरक को समक्ष उपस्थित कर ही देते है, उसी प्रकार भगवान ने अपने अति प्रिय भक्तराज श्रीरूप गोस्वामी जी को रात्रि के द्वितीय प्रहर में स्वप्नादेश दिया कि मेरी सेवा के लिये लालायित जीव गोस्वामी, मेरे श्रीविग्रह की सेवा करने लिये अभिप्सित है, अतएव मेरा यह दामोदर विग्रह

जीव को प्रदान कर दो। इसके साथ रूप गोस्वामी जी की निद्रा भंग हो गई, वे उठकर बैठ गये और प्रातः काल की प्रतीक्षा करते प्रभु ध्यान में लीन हो गये। ब्रह्म वेला में जीव गोस्वामी के पास गये और उन्हें श्रीदामोदर जी का अनुपम कान्ति युक्त वह श्रीविग्रह भेंट किया। यकायक मनवाँछा पूर्ण होने से श्रीजीव गोस्वामी भाव विह्वल हो गये। उसी क्षण से सेवा में अपने आपको समर्पित कर दिया। भाव प्रवणता से प्रभु को अपने भावना सागर में अवगाहन कराने लगे। दिनोंदिन परस्पर अनुराग गहराने लगा।

समय आने पर श्रील जीव गोस्वामी जी ने मंदिर की स्थापना कर श्रीविग्रह को मंदिर के गर्भ गृह में सिंहासन पर विराजमान कराया। श्रीराधा दामोदर जी के श्रीविग्रह के अतिरिक्त सिंहासन पर और श्रीविग्रहों का दर्शन लाभ होता है, श्रीराधा दामोदर जी के साथ में ललिता सखी का विग्रह विराजमान है। श्रीकृष्ण दास कविराज के सेवित ठाकुर श्रीराधा वृन्दावन चन्द जी का बाईं ओर दीर्घ विग्रह है। तथा बाईं ओर ही श्रीजयदेव गोस्वामी द्वारा सेवित ठाकुर राधा माधव जी महाराज हैं। इनकी बाईं ओर ठाकुर छैल चिकन जी महाराज जो श्रील भूगर्भ गोस्वामी जी द्वारा सेवित हैं।

आलोच्य मंदिर का प्रथम पाटोत्सव सन् 1542 में माघ शुक्ल दसवीं को हुआ था। यह मंदिर माध्व गौड़ेश्वर चैतन्य संप्रदाय के अन्तर्गत आता है।

मंदिर की भूमि आलीशा चौधरी से जीव गोस्वामी ने मात्र 60 रुपयों में क्रय की थी। जीव गोस्वामी जी ने अपने परम सहयोगी विलास दास और कृष्ण दास के सहयोग से इस मंदिर का निर्माण कराया था। मंदिर का प्रवेश द्वार और जगमोहन पर अंकित प्रस्तर कला का योग परिलक्षित होता है, जिसमें राजस्थान शैली मुखर प्रतीत होती है।

इस ऐतिहासिक पावन स्थल पर गोस्वामियों द्वारा ग्रंथ प्रणयन तथा विविध भक्ति प्रसंगों को लेकर आलोचना हुआ करती थी, उस समय यहाँ का ग्रंथागार अति समृद्ध था। हस्त लिखित ग्रंथों का प्रचुर भंडार था। स्वयं जीव गोस्वामी जी ने अनेक कालजयी ग्रंथों की रचना की थी, जिसमें गोविन्द लीलामृत और षड् संदर्भ विशिष्ट माने जाते हैं, जो भक्तों और अध्येताओं का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। यहीं श्रीकृष्ण दास कविराज ने संप्रदाय का बहुचर्चित ग्रंथ श्रीचैतन्य चरितामृत का लेखन सम्पन्न किया था। यदि इस मंदिर को तात्कालीन भक्ति विश्वविद्यालय कहें तो अतिरंजना न होगी।

इसके अतिरिक्त श्रीसिंहासन पर निताई गौरांग के श्रीविग्रह विराजमान हैं। साथ-साथ श्रीनारायण शालिग्राम दामोदर शालिग्राम नृसिंह शालिग्राम एवं ठाकुर श्रीजगन्नाथ महाराज श्री विराजमान हैं।

मंदिर परिक्रमा में अनेक महापुरुषों की समाधियों के दर्शन होते हैं, जिसमें प्रमुख रूप से श्रील रूप गोस्वामी, श्रील जीव गोस्वामी, श्रील कृष्णदास, कविराज गोस्वामी एवं श्री भूगर्भ गोस्वामी की मूल समाधियाँ सहित आचार्य श्रील गोराचांद गोस्वामी जी महाराज, श्रीभक्ति सिद्धान्त सरस्वती ठाकुर एवं अनेक गौड़िया वैष्णवजनों की पुष्प समाधियाँ विद्यमान हैं, इस्कॉन के संस्थापक श्रील ए.सी. भक्ति वेदान्त स्वामी प्रभुपाद जी की भजन कुटीर एवं रसोई घर मंदिर परिसर में आज भी स्थित है। श्रील रूपगोस्वामी जी, श्रीलजीव गोस्वामी के समाधि मंदिरों में उनके दिव्य एवं अलौकिक श्रीविग्रह साक्षात् रूप से विराजमान हैं।

राधादामोदर मंदिर में विराजमान श्रीसनातन गोस्वामी जी जब गोवर्धन में चक्रेश्वर महादेव के मंदिर में रहकर परिक्रमा लगाने जाते थे। जब वे अति कृषकाय हो गये तो वे गोवर्धन परिक्रमा करने में अशक्य हो गये थे, मन ही मन भगवान श्रीकृष्ण से प्रार्थना करते रहते कि मेरा यह संकल्प चलता रहे, क्योंकि वे अन्न जल ग्रहण तभी करते थे, जब तक गोवर्धन की परिक्रमा न पूर्ण हो जाये। श्रीकृष्ण से गोस्वामी जी की यह स्थिति छिपी हुई न थी, उन्होंने स्वयं गोस्वामी जी के समक्ष प्रगट होकर उन्हें दर्शन दिया। गोवर्धन शिला पर अपने चरण चिन्ह के साथ गौ खुर तथा वंशी और लकुट अंकित कर दिये। दिव्यता से सुशोभित शिला को श्रीसनातन गोस्वामी जी को देते हुए कहा कि इसकी चार परिक्रमा करने से तुम्हारा नित्य नियम पूरा हो जायेगा। इस मंदिर में वही गिरिराज शिला विराजमान है। यदि कोई भक्त राधा दामोदर मंदिर की चार परिक्रमा कर लेता है तो उसे सप्त कोस की गिरिराज जी की परिक्रमा का फल प्राप्त होता है। यह गिरिराज शिला जन्माष्टमी के अवसर पर भक्तों के दर्शनार्थ सिंहासन पर विराजमान की जाती है। यह दर्शन साल में एक दिन ही सुलभ होते हैं।

उत्सवों का क्रम यहाँ अनवरत रहता है। श्रीरूपगोस्वामी, जीव गोस्वामी श्री गोराचांद गोस्वामी, श्रीप्रभुदपाद जी के तिरोभाव महोत्सव के रूप में प्रतिवर्ष मनाये जाते है। इस मंदिर का सबसे बड़ा उत्सव कार्तिक नियम सेवा का चौंतीस दिवसीय आयोजन भव्यता लिये रहता है। अपार भक्त समुदाय अपनी भावनाओं के सुगन अर्पित करने के लिये उमड़ पड़ता है। इस मास को दामोदर मास भी कहा जाता है, राई (राधा) दामोदर की आराधना से इस मास में विशेष लाभ होता है। इसी उत्सव में अन्नकूट एवं छप्पन भोग के दर्शन होते हैं, तुलसी शालिग्राम विवाह तथा राधादामोदर जी रासेश्वर स्वरूप की झाँकी दर्शनों से भक्त वृन्द कृतार्थ होते हैं। शरद पूर्णिमा को गर्भ गृह के बाहर आकर दर्शन होता है, गोपाष्टमी को ग्वाल स्वरूप तथा राधारानी के सुबल सखा के रूप में चरण दर्शन होते हैं जो वर्ष में मात्र एक ही दिन होते हैं। इसके अतिरिक्त उत्सवों में क्रमशः अक्षय तृतीया, रामनवमी, वामन द्वादशी, श्यामा सखी के दर्शन, राधाष्टमी, होली महोत्सव, गौरांग पूर्णिमा को श्रीकृष्ण चैतन्य देव का जन्मोत्सव बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है।

श्रीराधाश्यामसुंदर मंदिर

लोईबाजार से श्रीराधादामोदर जाने वाले मार्ग पर सवामन शालग्राम मंदिर के निकट ही श्रीराधाश्याम सुंदर जी का मंदिर है, जहाँ श्रीराधिकारानी के हृदय कमल से प्रकटित श्यामसुदर की मनमोहनी छवि विद्यमान है। लाला-लाली वाले मंदिर के नाम से विख्यात यह मंदिर नगर के अन्य देवालयों में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। श्रीश्यामसुंदर जी के प्राकट्य को लेकर एक कथा प्रचलित है जो इस प्रकार है कि एक बार श्यामानंद प्रभु मंदिर प्रागण के सामने रिक्त स्थान पर झाड़ू लगा रहे थे तब उन्हें वहाँ एक नुपूर प्राप्त हुआ। ठाकुर श्याम सुंदर ने कहा कि यह नूपुर किशोरी जू का है मुझे दे दो, तब मंजरी भाव में डूबे श्यामानंद प्रभु ने कहा कि हम अपने हाथों से प्रियाजी को पहनायेंगे। जब राधाजी वहाँ आयीं तो श्यामानंद ने अपने हाथों से उन्हें नूपुर धारण कराया। इससे प्रसन्न होकर राधाजी ने अपने हृदय कमल से श्रीश्यामसुंदर को प्रकट करके इन्हें सौंपा। ठाकुर श्रीश्याम सुंदर जी का प्राकट्य बसंत पंचमी सन् 1578 तद्नुसार संवत् 1635 को हुआ। भरतपुर के तत्कालीन राजा के कोषागार में स्वयं प्रकट श्रीराधारानी का विवाह ठाकुर श्यामसुंदर से सन् 1580 में बसंत पंचमी के दिन कराया गया। उसी

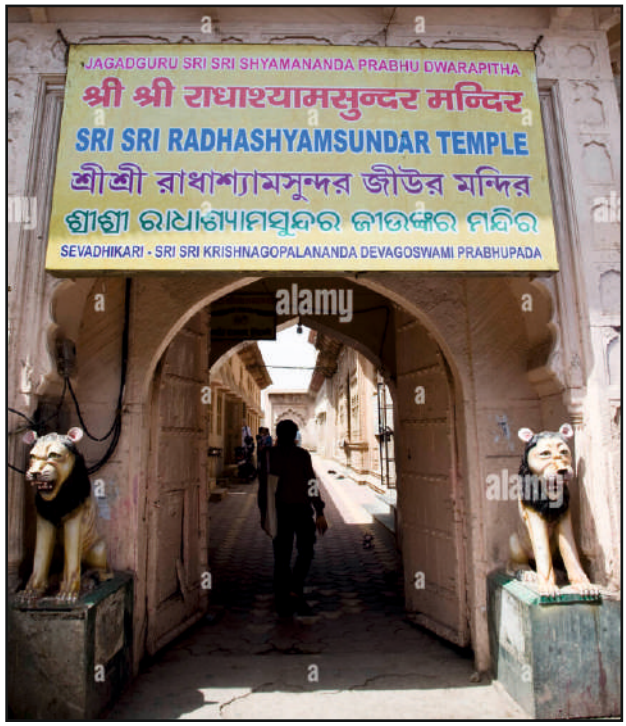

राजाने इस विशाल भव्य मंदिर का निर्माण कराया। श्रीराधाश्याम सुंदर मंदिर भक्ति और आस्था का प्रमुख केन्द्र है। आज भी इस मंदिर की मंगला आरती सबसे पहले होती है जिसके दर्शन करने को श्रद्धालु पूर्ण भक्ति भावना के साथ प्रात:काल मंदिर के जगमोहन में एकत्र होते हैं। अक्षय तीज (जिसे चन्दन यात्रा के नाम से भी जाना जाता है) के दिन मंदिर में विराजित सभी श्रीविग्रहों का चन्दन से सर्वाङ्ग लेपन कर चन्दन से ही निर्मित आभूषणों का दिव्यतम शृंगार किया जाता है। यह उत्सव यहाँ का विशेष पर्व है। इस उत्सव में सम्मिलित होने के लिये देश-विदेश के अनेक भक्त आते हैं। मंदिर के मुख्य द्वार देश पर सिंहो की दो मूर्तियाँ स्थित है। मंदिर में प्रवेश करते ही विशाल जगमोहन सभी का ध्यान अपनी ओर खींचता है। मंदिर परिसर में परिक्रमा करने वाले मार्ग पर मंदिर के पूर्ववर्ती आचार्य एवं सेवायत बलदेव विद्याभूषण पाद की समाधि स्थित है। बलदेव विद्याभूषण अत्यंत विद्वान थे। इनका जन्म 18 वीं शताब्दी में उड़ीसा के रेणुमा के किसी निकटवर्ती ग्राम में हुआ। जयपुर नरेश सवाई जयसिंह द्वारा जब सभी संप्रदायों से अपना-अपना भाष्य प्रस्तुत करने को कहा तब इन्होंने ही जयपुर के गलता घेरा में चैतन्य सम्प्रदाय का "गोविन्द भाष्य" प्रस्तुत किया। कहा जाता है स्वयं ठाकुर गोविन्द देव ने इनसे इस भाष्य की रचना करवायी। लगभग 800 वर्ग गज में स्थित मंदिर में संप्रदाय की परंपरा के अनुसार समस्त उत्सवों के अतिरिक्त जलयात्रा, झूलनोत्सव, फूल-बंगाल, शरद पूर्णिमा, सांझी उत्सव, होली, दीपावली, बसंत आदि मनाये जाते हैं। कार्तिक मास में नियमसेवा संचालित की जाती है। मंदिर में सात आरती, पांच भोग की सेवा का विधान हैं। आरतियों का समय परिवर्तन ऋतुओं के अनुसार होता है। गौड़ीय संप्रदाय के अनुसार ठाकुर की माधुर्य भाव की सेवा है। वर्तमान में मंदिर की समस्त व्यवस्थायें श्री महन्तजी के निर्देशन में सुचारू हैं। मंदिर में प्रतिदिन गौड़ीय भक्तों द्वारा रचित पदावलियों एवं श्रीहरिनाम संकीर्तन होता है।

वर्ष 2003 में जब मंदिर का जीर्णोद्धार कराया जा रहा था तब कार्य के दौरान एक गुफा मिली है जिसके बारे में कहा जाता है कि उक्त गुफा श्यामानंद प्रभु की साधना स्थली थी।

मंदिर श्री गोकुलानन्द जी

मंदिर-नगरी वृन्दावन में श्री राधारमण मंदिर के सामने से होते हुए यदि केशीघाट की ओर बढ़े, तो राजा पटनीमल की कुंज के ठीक सामने एक सामान्य सा चौखंडी एवं मेहरावदार द्वार है श्री गोकुलानंद मंदिर का। उसमें प्रवेश कर हम एक खुले स्थान पर आते हैं, जो अपनी सीमाओं में 15 वी शती परवर्ती वृंदावन एवं श्रीचैतन्य

वैष्णव संप्रदाय के इतिहास की परतें अपने भीतर समेटे हुए शांत सा पड़ा है।

बायें हाथ पर एक छोटा सा घेरा है, जिसमें छोटी-बड़ी, नई-पुरानी कई समाधियां बनी हैं। वहाँ दाहिने हाथ पर उत्तरमुख एक बड़ी समाधि है श्रीलोकनाथ गोस्वामी की, जो श्रीचैतन्य महाप्रभु के आग्रह पर उनसे पहले बंगाल से ब्रज में आकर बसे। उसके दाहिनी ओर सफेद मकराने की कलात्मक समाधि है लोकनाथ जी के शिष्य श्री नरोत्तम ठाकुर की; जिन्होंने अपनी पदावली तथा ग्रंथों के माध्यम से श्रीचैतन्य अनुयायियों को एक सम्प्रदाय के रूप में संगठित किया। तत्पश्चात् बलुए पत्थर की कलात्मक नक्काशी पूर्ण श्री विश्वनाथ चक्रवर्ती की समाधि है, जिन्होंने भागवत पुराण, गीता, वैष्णव साहित्य पर भाष्य के साथ ही अनेक मौलिक ग्रन्थों की रचना की। अन्य अनेक समाधियों में से उल्लेखनीय है, गंगा नारायण चक्रवर्ती, कृष्णदेव सार्वभौम, सिद्ध बाबा कृष्णदास, तारापद मुखोपाध्याय, जे एल मेहता, सुचित्रा दासी (रोबिन बीच) आदि की समाधि।

सुंदर तमाल वृक्ष वाले समाधि स्थल के सम्मुख श्री गोकुलानंद जी का द्वार है। आँगन में जगमोहन के भीतर गर्भगृह में मार्बल सिंहासन पर विराजमान कई देव-विग्रहों के दर्शन होते हैं:

श्री राधा विनोदी लाल जी- श्रीलोकनाथ गोस्वामी, जो नित्यलीला की मंजुलाली सखी हैं, के सेवित युगल विग्रह। श्रीचैतन्य महाप्रभु के वृन्दावन प्रकट करने से पूर्व वह छत्रवन (छाता) के उमराव ग्राम स्थित किशोरी कुंड पर मानसी सेवा साधनारत निवास करते थे। उनकी तीव्र भक्ति पूर्ण उत्कंठा से द्रवित हो श्रीराधाविनोदीलाल जी प्रकट हुए। विरक्त साधक लोकनाथजी अपने आराध्य को झोली में विराजमान कर गले में लिये रहते थे। बाद में अन्य गोस्वामिगणों के आग्रह पर अपने ठाकुर सहित वृन्दावन आये तथा आजन्म यहीं रहे। मूलविग्रह आक्रांताओं के वृंदावन-मथुरा पर हुए अत्याचार के समय आम्बेर (जयपुर) नरेश द्वारा ले जाई गई, जो त्रिपोलिया, जयपुर में विराजमान होकर पूजित हैं।

श्रीगिरिराज शिला- 1515 ई. की ब्रजयात्रा के समय श्रीचैतन्य महाप्रभु के उपासनार्थ श्री गिर्राज शिला अपने साथ पधराई थीं। सदैव उनके श्रीहस्त में विराजमान रहने के कारण श्रीगिर्राजशिला में श्रीचैतन्य के अंगुठे का चिन्ह अंकित हो गया। वह विशिष्ट गिरिराज शिला यहां श्री रघुनाथदास गोस्वामी, गंगानारायण चक्रवर्ती, विश्वनाथ चक्रवर्ती, बलदेव विद्याभूषण आदि की परंपरा में सेवित होती हुई विराजमान है एवं श्री चैतन्यानुयायी वैष्णवों की पवित्रतम उपास्य विग्रहों में से एक है।

श्रीगोकुलानंद जी- श्रीविश्वनाथ चक्रवर्ती, जो नित्यलीला में विनोद मंजरी हैं, के द्वारा प्रतिष्ठित अष्टधातु की लघु त्रिभंग ललित मनोहर श्रीकृष्ण विग्रह, जिनके नाम पर यह मंदिर प्रसिद्ध है। विद्वत्ता तथा

शास्त्रीय कृतियों के कारण आपको श्रीरूप गोस्वमी का अवतार माना जाता है।

श्रीचैतन्य महाप्रभु- श्रीनरोत्तमदास ठाकुर, जो नित्यलीला में चम्पक मंजरी हैं, के द्वारा प्रतिष्ठित प्राचीनतम चैतन्य विग्रह। छह गोस्वामिगणों ने वृन्दावन की माधुर्यमयी रसोपासना और भक्ति की धारा को भूमंडल में प्रचारित करने हेतु जिन भक्त-विद्वानों को दायित्व दिया उनमें खेतुरी, बंगाल के राजकुमार श्रीनरोत्तमदास ठाकुर महाशय का अन्यतम स्थान है। भारतीय भावभूगोल के निर्माण में हमारी धार्मिक सांस्कृतिक परंपराओं का प्रमुखतम हाथ रहा है। भारत के पूर्वोत्तर अंचल के सर्वाधिक दूरस्थ प्रांत मणिपुर, त्रिपुरा आदि, के प्रत्येक नर-नारी की यही आकांक्षा रहती है कि जीवन में एक बार वे आवें वृंदावन और वहां भी विशेषतया अपने आराध्य श्रीगोकुलानंदजी के दर्शन करने हेतु। यहां समाधिस्थ ठाकुर महाशय ने ही सर्वप्रथम समस्त पूर्वोत्तर भारत को वैष्णव धर्म में अनुप्राणित किया था। कहां मणिपुर, त्रिपुरा और कहां वृंदावन, दोनों को जोड़ने वाली कड़ी हैं श्री गोकुलानंद मंदिर।

श्री राधाविजयगोविंद जी- श्री बलदेव विद्याभूषण सेव्य। उन्होंने 18 वीं शती में जयपुर में श्रीगोविन्द मंदिर की परंपरा की रक्षार्थ ब्रह्मसूत्र पर भाष्य प्रकट किया, जो गोविन्दभाष्य नाम से विख्यात है। गलता के ऐतिहासिक शास्त्रार्थ में श्री बलदेव जी ने विजय प्राप्त की अत: उनके आराध्य श्री राधा विजय गोविंद कहलाये। उपनिषद, गीता, भागवत की टीकाओं के अतिरिक्त श्रीबलदेव जी ने अनेक शास्त्रों की रचना की।

श्रीगंगा देवी- श्रीगंगानारायण चक्रवर्ती सेव्य।

श्रीगोकुलानंद मंदिर, वृंदावन में अपना अतिविशिष्ट ऐतिहासिक महत्व रखता है, जो श्रीचैतन्य पूर्ववर्ती युग से चली आ रही परंपराओं को आज तक बनाए हुए हैं। यदि वह नरोत्तम, विश्वनाथ, बलदेव, कृष्णदेव के काल में शास्त्रा लोचन का प्रमुख केंद्र था, तो आज भी वहां प्रमुख वैष्णव विद्वानों के प्रवचन नियमित रूप से होते रहते हैं। जहाँ श्री नरोत्तम ठाकुर ने अपनी प्रवर्तित विशिष्ट संकीर्तन शैली से पूर्ण मानवता को सराबोर किया, तो वृंदावन के लीला-कीर्तनियायों में प्रमुख श्री बाबा नवद्वीप दास जी भी आजन्म पदावली तथा पालाकीर्तन यहीं रहकर करते थे।

राजस्थान सरकार के देवस्थान विभागाधीन इस देवालय की सेवा के दायित्व का जगद्गुरु श्रीचैतन्य सम्प्रदायाचार्य श्री पुरुषोत्तम गोस्वामी जी महाराज ने आजन्म निर्वाह करने के साथ ही इस ऐतिहासिक पावन धरोहर का विस्तृत संस्कार भी कराया। वर्तमान में उन्हीं के ज्येष्ठ पुत्र आचार्य श्री श्रीवत्स गोस्वामी जी के तत्वावधान में श्रीचैतन्य प्रेम संस्थान विधिवत् सेवा पूजा, उत्सवादि की व्यवस्था करता है।

मंदिर में श्रीचैतन्य सम्प्रदाय की पद्धति से सेवा-पूजा तथा उत्सव आदि सम्पन्न होते हैं। सात आरती तथा पाँच भोग, वार तथा ऋतु अनुसार संपादित होते हैं।

यहाँ के विशेष उत्सव-

वैशाख शुक्ल 3-अक्षय तृतीया; ज्येष्ठ पूर्णिमा-जलयात्रा; श्रावण कृष्ण 5-8 लोकनाथ महोत्सव, भाद्रकृष्ण 1- राई राजा, 8- जन्माष्टमी तथा शुक्ल 8- राधाष्टमी; कार्तिक कृष्ण 5- नरोत्तम ठाकुर उत्सव; कार्तिक शुक्ल 1-गोवर्धनपूजा; माघ शुक्ल 5- विश्वनाथ चक्रवर्ती उत्सव।

हेरिटेज लुक में दिखेगा उ.प्र. ब्रज तीर्थ विकास परिषद कार्यालय

★ तीन मंजिल के इस शानदार भवन की कई विशेषताएं।
★ मुख्यमंत्री जी और परिषद उपाध्यक्ष के कक्ष द्वितीय तल पर।

चन्द्र प्रताप सिंह सिकरवार

अब ब्रज के विकास की परियोजनाएं उ.प्र. ब्रज तीर्थ विकास परिषद के नए भवन में तैयार होंगी। तीन मंजिल के इस शानदार भवन में कई विशेषताएं होंगी। बाहर से देखने पर इसका हेरिटेज लुक नजर आएगा। भवन का बाह्य हिस्सा ऐसा प्रतीत होगा जैसे कि ये पुराने जमाने में बनी ब्रज की कोई कुंज है। इसकी वास्तु शैली कमोवेश राजस्थान के महलों से मिलती-जुलती नजर आएगी।

उ.प्र. ब्रज तीर्थ विकास परिषद का यह भव्य कार्यालय जिला मुख्यालय पर कृषि, उद्यान विभाग के कार्यालयों और जवाहर बाग के गेट के सामने बन रहा है। इसका लगभग 90 फीसदी कार्य पूर्ण हो चुका है। भवन की लागत 9.50 से 10 करोड़ के बीच है। ये लगभग 16 हजार वर्ग फुट एरिया में है।

उत्तर प्रदेश ब्रज तीर्थ विकास परिषद के पदेन अध्यक्ष प्रदेश के मुख्यमंत्री हैं। उनका कक्ष द्वितीय तल पर है। मुख्यमंत्री जी के कार्यालय कक्ष को आधुनिक नयी तकनीक व सुविधाओं से सुसज्जित किया जा रहा है। इसी तल पर शानदार सभागार है जिसमें परिषद की (बोर्ड) बैठक के अलावा अन्य बड़ी बैठकें होंगी। इस सभागर में 60 अधिकारी व परिषद सदस्य एक साथ बैठ कर ब्रज के विकास की समीक्षा कर सकेंगे। परिषद के पदेन अध्यक्ष व मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी के कक्ष के पास ही परिषद के उपाध्यक्ष का कक्ष है। वर्तमान में उपाध्यक्ष पद पर श्री शैलजाकांत मिश्र जी हैं। उनका मुख्य सचिव स्तर का दर्जा है।

प्रथम तल पर उ.प्र. ब्रज तीर्थ विकास परिषद के मुख्य कार्यपालक अधिकारी का कक्ष है। उनके कक्ष के अलावा इस तल पर एक छोटा सभागार है जिसमें स्टाफ की बैठक होंगी। वर्तमान में मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री नगेंद्र प्रताप जी आईएएस हैं, जो प्रथम तल पर अपने स्टाफ के साथ बैठेंगे। तकनीकी टीम के अफसरों के बैठने की व्यवस्था भी इसी तल पर रखी गयी है। ग्राउंड फ्लोर पर ही डिप्टी सीईओ, एकाउंट अफसर और वर्किंग स्टाफ के कक्ष हैं। इसी फ्लोर पर ही जिला पर्यटन अधिकारी का कार्यालय रहेगा। बेसमेंट में अधिकारियों के वाहनों की पार्किंग हो सकेगी। उच्च तकनीक की लिफ्ट भी कार्यालय में लगायी गयी है।

उ.प्र. ब्रज तीर्थ विकास परिषद के तकनीकी विशेषज्ञ श्री आर.के. जायसवाल बताते हैं कि कार्यालय भवन में प्रवेश करते ही दीवारों पर मथुरा, वृंदावन, गोवर्धन, बरसाना, गोकुल व बलदेव के दर्शनीय स्थलों के चित्र अंकित होंगे।

कार्यालय आने वाले बाहर के श्रद्धालु इन चित्रों को देख ब्रज भ्रमण की मन:स्थिति बना सकेंगे। अगले दो-तीन माह में यह कार्यालय बनकर पूर्ण होगा। इसका लोकार्पण प्रदेश के मुख्यमंत्री व परिषद के अध्यक्ष योगी आदित्यनाथ जी कर सकते हैं। इस दौरान वे अपने कार्यालय कक्ष में ब्रज विकास की समीक्षा भी कर सकेंगे।

वर्तमान में उ.प्र. ब्रज तीर्थ विकास परिषद की देखरेख में अनेक परियोजनाओं पर काम चल रहा है।

ब्रह्मांड घाट की सुंदरता देख तीर्थयात्री मुग्ध

★ उ.प्र. ब्रज तीर्थ विकास परिषद ने चिंताहरण महादेव मंदिर के जीर्ण-शीर्ण घाट को सुंदर बनाया

उ.प्र. ब्रज तीर्थ विकास परिषद ने पुरानी गोकुल के नन्दभवन से तीन किमी पूर्व में स्थित यमुना के ब्रह्माण्ड घाट का कायाकल्प कराया है। यहां चबूतरा, वाहन पार्किंग, प्रवेश द्वार और जन सुविधा केंद्र के निर्माण पर 67. 35 लाख व्यय हुए हैं। इस घाट से एक किमी पूर्व में चिंताहरण महादेव मंदिर के जीर्ण-शीर्ण घाट को भी सुंदर बनाया गया है। इस पर 121. 36 लाख व्यय हुए हैं।

प्रचलित कथानक के अनुसार ब्रह्मांड घाट वही स्थल है, जहां पर बचपन में श्रीकृष्ण ने सखाओं के साथ खेलते समय मिट्टी खाई थी। मां यशोदा ने बलराम से इस विषय में पूछा। बलराम ने भी कन्हैया के मिट्टी खाने की बात की पुष्टि की। मैया ने घटनास्थल पर पहुंच कर कृष्ण से पूछा- 'क्या तुमने मिट्टी खाई?' कृष्ण ने उत्तर दिया- 'नहीं मैया, मैंने मिट्टी नहीं खाई।' यशोदा मैया ने कहा- 'कन्हैया, अच्छा तू मुख खोलकर दिखा।' कन्हैया ने मुख खोल कर कहा- 'देख ले मैया।' मैया मुख देख स्तब्ध रह गई। बालक कृष्ण के मुख में समूचा ब्रह्माण्ड दिखा था। इस घाट पर तीर्थयात्री पहुंचते हैं और वे इस लीला के अनुसार वहां की मिट्टी लेकर जाते हैं।

ब्रह्मांड घाट से एक किमी पूर्व में चिंताहरण महादेव मंदिर है। बालक कृष्ण के मुख में ब्रह्मांड देख जब मैया यशोदा चिंता में पड़ गयी, तब भगवान शंकर ने इसी स्थान पर उनकी चिंता का हरण किया था। दोनों घाटों के संपूर्ण परिसर देखरेख के अभाव में क्षतिग्रस्त थे। घाटों पर गंदगी रहती थी। उ.प्र. ब्रज तीर्थ विकास परिषद ने दोनों घाटों का कायाकल्प कराया है। सुंदर प्रवेश द्वार बनवाये हैं। ब्रह्मांड घाट पर एक टायलेट ब्लाक का निर्माण हुआ है जिसमें महिला व पुरुषों के लिए जन सुविधा केंद्र है। रंगीन इंटरलॉकिंग टाइल्स से ब्रह्मांड घाट की पार्किंग का निर्माण हुआ है, जिसमें 50 वाहन एक साथ खड़े हो सकते हैं।

नगर निगम मथुरा-वृन्दावन, मथुरा

स्वच्छ मथुरा

स्वच्छ सर्वेक्षण 2023

आपका शहर भाग ले रहा है।

"अपने मथुरा को दिलाए सम्मान स्वच्छता में देकर अपना योगदान"

- नगर निगम मथुरा–वृन्दावन स्वच्छ सर्वेक्षण–2023 हम सभी का कर्तव्य है कि अपने नगर को स्वच्छ बनायें।
- घर/दुकान से निकलने वाले कूडे–कचरे को डोर–टू–डोर स्वच्छता मित्र को ही दें। कूडे को सडकों/नालियों/गलियों में न फेंके और ना ही किसी को फेंकने दें। हमेशा कूडेदान का प्रयोग करें।
- घर से निकलने वाले गीले कूडे (*Home Composting*) से खाद बनायें।
- प्लास्टिक एवं प्लास्टिक/थर्माकोल से निर्मित वस्तुओं का प्रयोग पूर्णतः प्रतिबन्धित है।
- खुले में शौच न जायें। अपने निकटतम सार्वजनिक/सामुदायिक शौचालय का प्रयोग करें।

"साथ मिलकर करो ये वादा,
स्वच्छ मथुरा–वृन्दावन बनें हमारा"

अनुनय झा (IAS)
नगर आयुक्त
नगर निगम मथुरा–वृन्दावन